तृतीय—परिच्छेद

वैराग्य परशु शतक काव्यों में प्रकृति चित्रण
1. वैराग्य शतक में प्रकृति चित्रण

महाकवि भरतेहरि कुल वैराग्य शतक (7वीं शती) संस्कृत साहित्य का प्राचीन उपदेशपरक शतक काव्य है। इसमें संसार की वास्तविकता मानव जीवन के लक्ष्य परमाथोपदेश एवं भोग परायण विषयी मनुष्यों की दुरदशा तथा उनकी वैदिक दयनीयता का अतिसूक्त किन्तु हृदयहारी वर्णन हुआ है। इसमें प्रकृति के प्रायः सभी पक्षों का वर्णन उपलब्ध होता है। जिसे निम्नवत् देखा जा सकता है—

(I) बाह्य प्रकृति चित्रण—

(क) कोमल पक्ष—

निम्नांकित एक स्थल पर बादल रूपी वस्त्र से आच्छादित चन्द्रमा का वर्णन अत्यन्त मनोहारी है—

येनेयामवर्खंजन संवीतो निशि चन्द्रमा:।।

निम्नांकित पंक्ति में कमलनाल का वर्णन दृष्टिगत है—

बिसमलमशानाय स्वादु पानाय तोयं,
शायनमवनिःश्च वल्क्ले वाससी च।।

गंगा के तीर तथा वृद्ध हिरण का निशांक होकर देह खुजलाने का वर्णन निम्नवत् है—

गंगारीरे हिमगिरिशिला बद्ध पद्मासनसनस्य
श्रृंगध्यानायसनविविलिना योगानिध्रुव गतस्य
किं तेम्भव्यं मम सुदिवसेर्यत्र ते निर्विशंका:
संप्रास्यन्तो जरठहरिणा: श्रृंगकंडुविनोदम्।।

इसके अतिरिक्त अन्य भी गंगा का दृश्य वर्णित है जैसे—

tपस्यन्त: सान्त: किङ्किङ्किनिवसाम् सुरसन्दी।।

x x x x

महादेवो देवः सरिदिपि च सैणा सुरसरिद् गुहा
एवागां वसनमपि ता एव हरित:।।

x x x x

चेत: स्वर्गतर्गितेशतमुवामासाधंगमंगम् करु।।
गंगाुगार्तत: गकणशीकरशीतलनि
विद्याधराध्युपितवाचारुशिलातलानि

रनात्मा गांड.गै.: पयोभि: शूचिकुसुमकृतसावृविविलितविमोचो।
कदा वाराणसीमरततिनौ रोधसिवसन।।

इसी भावति पर्वत, झरना, सरस फल वायु तथा लताओं का वर्णन देखिये—
किं कन्दा: कन्दरेम्य: प्रलयमुपगता निर्मिता वा गिरिम्य: प्रयवस्ता वा तन्मय: सरसफलमूत्रो वल्क्लेम्यवर्ष शाखा:।
दीक्षक्ते यन्नुक्तचि प्रसंसमपगतप्रस्थर्याणां खलानां
दुःखोपात्म्यविवितमयवशपनानान्तित भूलतानि।।

पर्वत शिला रुपी शायया, गुफा रुपी घर, वृक्ष छाल रुपी वस्त्र हिरन रुपी
मित्र झरने आदि का सुनदर वर्णन यहां द्रष्टव्य है—
शायया शेल शिला गृहं गिरिगुहा वस्त्रं तरुणा त्वथः
सारंगः सुहृदीननुक्तितन्न हृदद: वृत्तिः फलेः कोमलैः।
येशा निःसारमपुणामुचितं रत्नेऽविधान्यान
मन्ये ते परस्परतः शिरसि चैवब्द्रो न सेवायज्जितः।।

काम., कोवल दो कोमल कलरव आदि का विचण प्रस्तुत श्लोक में देखिये—
रे कंदर्प करं कर्मचयसि कि को दण्डोध.कारकः
रे रे कोकिल कोमले: कलरव: कि त्वं वृत्या जल्पसि।
मुखे रिप्रौदविद्विग्यक्षेपमुर्लातः: कटक्षेतलं
चौतमुंगितचन्द्रचूडाद्वरण्यानामूलं वर्तति।।

यहां काल को श्रीहीन करने वाली खिली उजली चांदनी का वर्णन दर्शनीय
है—

गुरुरतर गुणाग्रामामोजस्वाददृश्वजवल चंद्रित्का।
भूर्षितिर केेराय शतक में उक्त स्थल के अतिरिक्त अन्य अनेक स्थलों पर
चंद्रमा और चांदनी का वर्णन किया जो मिम्नवत है—

1. वरम् पुण्यार्ज्जे परिणतशरणचक्षुकिरः।।
2. शरणचक्षुपोतनाधवलमणाभोगसुनागः।।
3. रतिः चंद्रार्घ्वोदयामायो।।

284
4. महीरम्या शर्मा विपुलमुप्पां भुजलता
    वितां चाकां व्यजनमनुकृत्त्दिगमित:।
    स्फुर्दीपवनन्द्रो विसर्जिनितासांगुमुदित:।
    सुख्य शान्त: रोते मुनिरतमुभिन्नृप इव।।

5. सम्याश्वदमरीचयश्पूणवती रम्या वनान्तरस्थली।।

6. भक्तस्तरुपणुरुशेखरे।।

7. चूड़ीतसिवदचारुकलिकाचवाचविन्धिकथारः।

(ख) कठोर पक्ष–
    प्रकृति के अन्तर्गत कठोर पक्ष का वर्णन निम्नवत है–
    
    यहां भूतल का खनन, धातुओं का भरमीकरण, समुद्र निस्तरण, शमशान में
    रात्रि व्यतीत करने का वर्णन है–
    
    उत्खातं निधिशादः कया क्षितितलंब्धात गिरीशायिवो
    निस्तीर्ण: सरितां पतिर्पृपतयो यत्नेन संतोषितः।
    मनोरायनपरेण मनसा नीत: शमशाने निशा:।
    प्राप्त: काण्वराकोषिपि न मया तृणोऽधुनामुच्यो माम।।

उवड़ खाड़ ढ़रेश का वर्णन है–
    भान्त्र देशमनकरुगियं याप्तं न किलिक्कलः
    
    यहां सूर्य के उदय–अस्त से जीवन का उत्तरोत्तर क्षीणता का वर्णन है–
    आदित्यस्य गतागततसरसः संक्षीयत: जीवितं
    व्यापारीश्वरकार्यभारसुभि: कालो न विज्ञायते।।

सर्प समुद्र के लोधने आदि का वर्णन द्रष्टव्य है–
    हिसा शून्ययमनलयमशान्धातामरुक्कम्पितः
    व्यालान्ना पशस्तरुपांकुरुज: सूष्य: र्खलीशविनः।
    संसारार्गवलंघनास्तिमयं बृहतं कृता सा नृणं
    यामनेषयतां प्रयाति सततं सर्वं समाप्ति गुण:।।

गहन वन को काटने का वर्णन द्रष्टव्य है–
    जराजीर्ष्यस्यप्रसनणाहनकाश्चक्कुः
    स्थूषापांत्र: यष्यां भवति महतमान्यधिपति:।।

प्रस्तर वाले हिमालय की घाटी का वर्णन देखिए–

285
पूताग्रामगिरिन्द्रकन्दरदरीकुञ्जे निवासः कविचित् ॥
यहां काल की ग्रासा तीला का वर्णन देखिए—
इत्यं चेमी रजनिदिवसी दोलसदाविवाही
कालः काय्या सह बहुकलः कीड़ंतिप्राणसारे। ॥
अधोगामिनी गद्गः गा का सुन्दर चित्रण है—
शिरः शार्व स्वर्गलसुपति शिरसस्तः क्षितिगरः
महीधातुपुंगादवनिमवनेश्चापि जलधिम।
अधोभोगङ्गः सेयं पदमुपगता स्तोकमथवा
विवेकमहतानां भवति विनिपातः शतमुखः। ॥
अभि से आहत मेरू पर्वत का पतन, समुद्र के सूखने आदि का दर्शनीय
स्थल—
यदा मेरूः श्रीमान्निपतति युगान्ताभिनिवहतः
समुद्रः शुष्कति प्रवुसरनिकग्राहनिलयः.
धरा गच्छत्यन्तं धरणि धर्मादै रंगे धृता
शरीरं का वार्ता करिकलमकराण्याकर्पले। ॥
यहां पर्वत—गुफा के पापण मुख पलंग का वर्णन है—
क्षितिधरकुहरग्रामपयेडः गमूले। ॥

(II) प्राकृतिक उपादानों का अप्रस्तुत विचार—
भूरमय ने वैदिक शतक में भी प्रकृति का अप्रस्तुत उपादान के रूप में वर्णन
किया है। कमलनी के पताके पर पतलित जल बिन्दु का अप्रस्तुत उपादान के रूप में
बड़ा ही सुन्दर वर्णन दृष्टब्य है—
अमीषां प्राणां तुलित विकसीपतयसां
कृते विनासाभिषिविनिविदितवे वे केश्वपसितम। ॥
एक स्थल पर विषय भोग की चंचलता की तुलना बादलों के मध्य चमकती
विजली से की है—
भोगा मेघविलानमध्विवितसतोदामिनी चंचला।
आधुरायुधविचित्राभ्रमपतलीली नामव्यमुरसम। ॥
अन्यत्र अभिमान को वायु तथा भौह को लताओं के रूप में वर्णन किया गया
है—
बीक्षणेत यन्मुखाणि प्रसभापनातप्रश्नयाणां खलाणां।
दुर्खोपातात्य वितस्मयवशापवनानात्तित भूलतानि॥३३
एक स्थल पर अप्रस्तुत उपाधान के रूप में तरांगों, बादलों, विजली की चमक का वर्णन है—
आयुः कल्लोललोलं कलिपय दिवसस्थायिणी योक्स्नश्रीि्—३४
रथं: संकल्पकत्या घनसमयतालिक्ष्ममाभोम्पवसः।
कण्ठापलोपगूढ़ं तद्यथ च न चिरं यत्स्रायार्थ: प्रणीतं।
ब्रह्मण्यासक्तिविद्या भवत भव्यमुद्धयिपां तरीयुम्।
अन्यत्र पर्वत तथा वृक्ष आदि को उपमान के रूप में विचार किया गया है—
शायन्त शैलिला गृहं गमिगुहा वस्त्रं तरस्नां तवः
सारःं: सुहृदो ननु क्षितिहर्षां वृत्ति फलः: कोमलः।
येशा निर्ज्ञममुपानमुसिँतं रत्नेष विद्यागाना
मन्ये ते परमेश्वरः: शिरस्स धैर्य्दो न सेवावलितः॥३५
कमल, लता, बांधनी आदि का वर्णन देखिए—
अभिमतमहामानग्राण्थि प्रभैद पदियसः
गुरुतयाग्नामाममोजसकुतोक्ववल चन्द्रिका।
विपुलविशल्जावल्लावितान कुटारिका
जगदिगुढः दुष्प्रेष्यं करोति विविधवनम्॥३६
यहाँ कमलिनी के पत्र पर जल बिन्दु वर्णित है—
अमिखार्याणां तुलितविस्तरनीन्तर पयसां
क्रृते कित्नासामभितालित विवेकेतावशिंताम॥३७
यहाँ मगर, वृक्षों का विधंस, भंवर आदि का वर्णन है—
आशा नाम नदी मनोश्वजला तृणातरङ्गाकुला
राग्राहलेन वितकविहंगा धैर्युदमधर्यसिनी
मोहावर्तकुपूर्वकार्लिगहा प्रभुगृहिण्तात्रं
तस्मा: पारगता विशुद्धमसो नन्दन्ति योगीक्ष्वरः॥३८
बादल एवं विजली का वर्णन देखिए—
भोग मेघवितानमह्यविलसयोयदामिनि चच्चलः।
आयुर्वायुविधित्वात्राभ्रमपलंली नमुद्मुरुम्॥३९
यहाँ परिचय के रूप में विषयों का वर्णन देखिए—
वनान्ते चित्तांतारिखितंविषयाश्रयोविषयता।४०

(III) अन्त: प्रकृति चित्रण—

वैदिक शास्त्र के अन्तर्गत अभिव्यक्त विभिन्न मनोदशाओं में स्थित मनुष्यों का
बड़ा स्वाभाविक एवं हृदयाक्को वर्णन हुआ है। उनकी विभिन्न—भिन्नभिन्नमनसिक स्थितियों
का चित्रण निम्नवत् विवेचित किया जाता है—

(क) लौकिक भोगों से निराश पुरुषों की मनोदशा का वर्णन—
भौतिक सुख से धूष पुरुष की मनः स्थिति देखिए—
उद्विक्त निधिशाल्यका क्षितिजलल्लोका गिरेर्विल्ल्या
निरंतरण: सारितां पतिरूपत्यय यलने संतोषिता॥
मन्त्राराधनतत्त्वरेण मनसा नीता: शम्शाने निशा:
प्राप्त: काणवाराकोकोपि न मयातृषषष्युना मुह्खमाम्।४१
अथवा:
प्राप्तं देशमनकेदुर्गविषयम् प्राप्तं न किंचित्फलं
त्यक्तव जातिकुलाभिभावमुचििं सेवा कृति निषक्षिता।॥
भुक्तं मानविर्भवतं परगृहो शास्त्रक्षया कारक—
तृष्णां दुर्भजिस्यम्मश्नमिरते नायापि संतुष्यति।४२

इसी भावित—
कृष्णसेरणेतह्स्त्व गुरुपितां निमित्तनुभि: रेतीयते गर्भमदे।
कान्तिविशलेखु-व्यवस्तंविन्तति योवने विप्रुक्तः:
नाशीतांप्रत्यक्षा विलसति नियतं वृद्धभावोपयोगाः
संसारे रे मनुष्या वन्दत यदि सुखं स्वल्पम्यसिस्ति किंचित्।४३

(ख) भोग और योग से रहित पुरुष की चित्त की अवस्था का चित्रण—
भोग का सुख न प्राप्त करने वाले और न ही योग प्राप्त करने वाले व्यक्ति
की अन्त: स्थिति—
न ध्यातं यद्मीश्वरस्य विविध्वत्संसारिविचित्रत्ये
स्वर्गद्वायक्ष्यापाटादनपुरुषमार्गोपि नोपार्जितः।
नासीनपद्धोधरयुगलं स्वनेषुपि नालिनिद्वङ्गानं
मात्रं केवलमेव यौवनवनवेंद्रे कुठास कवम्।४४
इसी भाषा—
भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता
रत्नो न तपस्ये वयमेव तपस्ये।
कालो न यातो वयमेव याता—
स्त्रीणा न जीणा वयमेव जीणा।।

3. वृष्णाग्रस्त पुरुष पुरुष की दयानीय दशा का वर्णन—
लालसामुक्त पुरुष की मनः स्थिति निमनलिखित शलोक में दशख्य है—
वलिमिन्मुखमाकान्त पलितेरिकितं शिरः।
गात्रणे शिखिलायन्ते तुष्णेन परथायाय।।

एक स्थल पर पुरुष की दयानीय दशा देखिए—
गात्रं सकुचितं सततर्विगलता भ्रष्टा च दन्तावलिर्देशं
पिन्नस्यति वर्धते बधिरता वक्रं च लालयते।
वाक्यं नाधियते च बाध्यवजनो भायों न शुभ्रश्चते
हि कष्ट पुरुषस्य जीण्वयस्ते: पुष्पोपमात्रायते

(ग) कामुक पुरुषों शोचनीय मनः स्थिति का चित्रण—
कामना से ग्रस्त पुरुष की दुःखस्थि देखिए—
विवेकवाकोशों विद्यति शमे शाम्पति तृषा
परिष्येन गे तुड़े गे प्रस्तर्तियं सा परिणति।
जराजीयेन श्वर्याग्रनमणहनाकस्यकृपण
स्त्रीपात्रा यस्यं भवति मरतामयायपति।।

एक अन्य स्थल पर—
कृष्ण: कामन: खजन: श्रवणरिहि: पुर्वविकलो
ग्राणी पूवविल्यन्न: कृमिकुलशतरूपवृततनुः।
शुचाकामो जीणेः: पिटरजक पालार्पितग्नः
शुनीमन्येति त्वा हतमपि च हन्त्येव मदनः।।

अन्य स्थल पर—
भिक्षाशं तदपि नीरसमेकवारं
शय्या च भू मरिजनो निजदेहमात्र मृ।
वर्ष्ट्रे च जीन्यशतक्षण्डमलीनकथा

289
हा हा तथ्यापि विषया न परिष्यज्ञसि। ⁵⁰

(घ) भोग लोलुप दुष्टों की हृदय स्थिति—
भोग विलास से दुष्टता को प्राप्त व्यक्ति की मनः स्थिति देखिए—
बिसमलमशानाय स्वादु पानायतोयं,
शयनमवनिपृष्टे वलकले वाससी च।

वनवनमधुपानःमन्त्रसवोद्वियाणा—
मदवनयमनुमन्तुृ नोतसहे दुर्जनानाम्। ⁵¹

(ठ) गर्वोऽमल राजाओं के मनोभावों का वर्णन—
धम्मी राजाओं का वर्णन निम्नलिखित श्लोक में द्रष्टव्य है—
तवः राजा वयमसुपासि तपुःप्रजामिवानायसि:
ख्यातसंविंच्छवेयशासंसी कवयो दिश्यु प्रत्यक्षति नः।
इत्यं मानद नातिदूरसुभामियोपायोपस्तरं,
यद्यमासु पराइऽसुःसः वयमयेकान्ताती निस्वृहा। ⁵²

इसके अतिरिक्त अन्य कई स्थलों पर गर्वोऽमल राजाओं का वर्णन द्रष्टव्य है—

(च) वैराग्य सम्पन्न एवं विवेकशील पुरुष के स्वस्थ चित्त की स्थिति का विचरण—

वैराग्य शतक में, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें वैराग्य सम्पन्नी स्थल का वर्णन है, परन्तु कुछ विशेष स्थलों पर विवावहन विरक्त पुरुषों के मनोभावों का विचरण निम्नवत है—

भोगे रोगमय कुले च्युतिमयं चिते नृपालादोऽभम्
मौने देयमयं बले रिपुमयं सूपे जराया भयम्
शास्त्रं वादभयं मुपे खलभयं काये कृतानांदमयं
सर्व वस्तु भयास्वितं भुवि नृणां वैराग्येवायमयम्। ⁵³

पाणि: पात्रं पवित्रं भ्रमणपरिगतं भेष्मकशयमयमनं
विस्तीर्ण वस्त्रमात्रासुदंडकमल्लत्यमस्वत्यमुहः।

येवं निसंगतांगिकसुनिरगतं: स्वतंसतोष्णस्ते
धन्यं: संविुतादेश्यत्वतिकरनिकराः कर्म निर्मृत्यति। ⁵⁴

इसी भावति अन्य अनेक स्थल भी दर्शनीय हैं। ⁵⁵—
2. श्रृंगार वैराग्यतरंजिणी में प्रकृति चित्रण

सोमप्रभा चार्य प्रणीत श्रृंगारवैराग्यतरंजिणी (1276ई0) एक उपदेशक परक
लघु गीति काव्य है इसमें श्रृंगार सम्बन्धी भावों तथा प्रवृत्तियों से वैराग्य हेतु उपदेश
किया गया है। इसमें मनुष्य की अन्तः प्रकृति चित्रण के अतिरिक्त प्राकृतिक
उपादानों का अप्रसूत विधान भी पर्याप्त रूप से किया गया है। वाह्य प्रकृति चित्रण
का इसमें सर्वथा आभाव है।

(I) अन्तः प्रकृति चित्रण—

मनुष्य की प्रकृति प्रायः दुःखनिवृत्ति भयमुक्ति और सुख प्राप्ति की ओर प्रवृत्ति
रहती है और एतद् अर्थ स्थान—स्थान पर मानव माला को उद्वोधित किया है
कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य है—

धर्मविरामदेवानिशूमलहरीतावण्यलोकाः जुष्—
स्तनवड़ृष्टिमितानिविलोकवृयस्था बालाकिमुक्तक्षणसे।
व्यालान्दर्शनतोहि मुक्तनगरप्रस्थानानिविधक्षमाः—
न्त्यय दृशयमूर्तमृत्तिकुशलं पदात्रीणो वाच्चसि।५७

X X X

यें केशालसिताः ससरोहङ्गुर्ङां चारित्रचन्द्रप्रमाः:
संस्थामोदसहोदरास्तव सखे चेतःचमकारिणः।
कलेशान्वृत्तिमतोमबमन्यता दूरण तानुसूचे
नों चेतकष्ट परम्परपरिचित: शोच्यां दशामेण्यसि।५८

यहां काव्य के अधिकांशतः श्लोक उदाहरण रूप में दिये जा सकते हैं।५९
दर्शन पुरुष के चित्त को हरण कर लेता है और उस स्त्री संगी पुरुष की विचार
शक्ति धीरे—धीरे क्षीण हो जाती है—

ये शुद्धस्य शिशुकवधुरसाहुच्यः—
श्रीयत्त हरितस तय वच्चक्रमा: कृशादः ग्या।६०
कामोप्योग के करण पुरुषों का संयम नष्ट होता है—
दर्श दम्पुं पुंसामिह विरहसंयोगदस्यो—
ज्ञल्लच्छीकान्द, ज्ञल्लकणुगिर—कृष्णद्युगलम्।६१

बुद्धिमान पुरुष की दृष्टि में काम एक व्याप्ति होती है—

291
सत्यं विवेकनिधनैकनिमित्तमेतः
नेघाविवो हि परमं गदमुदगृणांश्च।६२

इसी हेतु बुद्धमान व्यक्ति सदेव काम भोग से विमुक्त होता है—
वामवृवां यदिदिकं तदहो अलोक—
मिस्त्राख्ययो वर्यातप्रवदन्ति रूपम्।६३

साकारमालोक्य मुखं तस्माय कं मुखमुखे मुदमाध्यासि।

इदं हि चित्रश्रममानात्तकस्य विचक्षणेवरुखमचक्ष्ये।६४

इससे सम्बन्धित अन्य स्थल भी द्रष्टव्य है।६५ मूर्खं बुद्धि वाले मनुष्यों की
सदेव काम भोग में प्रबृत्ति होती है—

साकारमालोक्य मुखं तस्माय कं मुखमुखे मुदमाध्यासि।६६

X X X

तार्कक सम्पूर्तं तस्मा: पश्यन्मूखं: परे भवे
नरो नरक पालेश्वरां तरं कं न सहिष्यते।६७

X X X

सारं गलं यमर विन्द विलोचना—
नामालोक्य चेतसिमुखं कलयतिमूढः।६८

इससे सम्बन्धित अन्य स्थल भी उदाहरणीय है।६९

वस्तुत: रग आदि दोषों द्वारा मूर्ख मनुष्य ही बंधित होते हैं—
तस्मा: सातुराद विलोक्यं वदने य: संशयवक्ष्यसं
मुक्तिवा मुक्तिपञ्च ह्यप्रविश्यति ब्राह्मणां सुदृढं वनम्।

तच्यात्यन्तमचारुबद्वसतित्यनात्र रागादिभिः
स्वैंर्ष्यमध्यनापहारकरणात्काः न कं प्राप्यते।७०

(II) प्राकृतिक उपादानों का अप्रसन्न विधान—

इसके अन्तर्गत प्रय: आराम कमलं, चन्द्रमा बादल, वन, समुद्र आदि का
अप्रसन्न विधान हुआ है। उदाहरणार्थ कमल—

ये केशा लसिताः सरोहृदुर्भां चारित्र चन्द्रमा: |७१

X X X

न भूरियं पञ्चक्षेत्रोचनाय।७२

इसके अतिरिक्त अन्य स्थल भी दर्शनीय है।७२
प्रमर—
अदूरस्थावर्ध्यासनघटना कलेशमहतां
विमुश्धानां तेशामिह मधुकराणामिव—नृणाम्।

इति ्वा ्वा ्वा ्तुत्तुलितवल्लम्बलयं।

मृगनेत्र—

पीनोन्नतं सतनलं मृगलोचनाय।

कन्दपरिणवकुम्भवारूणिकुबड़दृष्टे मृगाभ्यं मया
न्यासो हरस्त इति प्रमोदमदिरा माधननो मारस भू॥।

भृगनेत्र का अप्रस्तुत रूप में समावधिक स्थलों पर विचार हुआ है।

आराम (उधान)—

धर्मारामदागिन्डूम लहरी लावण्य लीला जुष्ण॥

सत्यं तासामनं लसं दृश्यं संघारामर्दाय॥

शमारमें कामं विचारवर्त्ति चित्ताहरिण॥

लता—

मृगीदृश्यामधिमुनलविल बालिष्ट।

वद्याधुल्लमहर्षन्कुं गमिलोवध्यानवल्लभयेव न मुक्तिम्।

सरोवर—

समरकीदवायां वदनकमले पक्षमलदृष्टं
दृढासिद्धिभाषामधर मधुपानं विद्यालाम॥।

बांधल—

भ्रंशाम्भोज सहोदरास्तं व सये वेतशचमत्कारिण॥

293
अमु विशुद्धाग्रहसायांस—प्रवासलें धनमेव विद्या।

X X X

चेतश्वाप्तमकलययु कुटिलाकाश कुरड़कीदृशो
दृष्टवा कुन्तलराजिमिजन धनस्यांमा किंमुताम्बस।

चन्द्रमा—
करसूरि कारिलिकतु ललिताष्ट्रमीन्दु
विचित विचिन्तायस सोख्यनिमित्तमेकम।

चन्द्रप्रभा—
ये केशा लसिता सरोरुह दृश्यां चारित्रचन्द्रप्रभा।

हर्ष—
अमु विशुद्धाग्रहसायांस—प्रवासलें धनमेव विद्या।

महासर्प—
एतरिन्द्रसतानोभयमहासर्पं दृष्ट: पुमान्।

X X X
कण्ठोपकटे ललितं विमायेय भुंजं युवत्या भुजगंगरा जितम।

इससे सम्बन्धित अन्य स्थल भी अवलोकनीय है।

सर्पश्रेणी—
धर्मायामहानिधानमधुना स्वीकृतुकामस ये
प्रत्यूत्तरभुपस्तितेयमुरुग श्रेणत साधितायेः।

सर्प— निमोक (केंचुल)
ना भीरस्वे विहितवसतियोक्षर नन्दर्पसर्प—
स्तन्युक्तोदं स्पुरुरति रूपिः किंवुनिमोकपद्म:।

सर्प चित—
सफूर्ज्ञनोभवभुजळः गमपाश्चानभी
नामीकुरड़, नक्ट्ट्सा दृशि यस्य लग्ना।

दावागिनघुमलहरी—
धर्मासामदवागिनघुमलहरीवल्लेलालारुषः।

वन—
तस्या: कोषपदं यदान्महोरांतस्मरणात्सन:。

294
सन्तापं वितनोष्ठि काननमहो ज्ञात्या सखे तत्तयजे।

X X X

मुक्त्या मुक्त्यत्वं हत्ता प्रवश्यिति भान्त्या सुदुर्ग वनम्।

X X X

मृगेश्या नूनमसावसीमा भीमावटिवुधिमतातिचिया।

इसके अतिरिक्त इससे समस्तित अन्य रथल भी दृष्ट्यव हैं।

समुद्र—

यियासस्ति भवोदस्तेयिदि तत्ते लादेयौदास।

X X X

सपदि विदाहति या मोहिनिद्रासमुद्र।

अग्नि—

जव्लच्छोकानंदः महलमवृणिद कुण्डयुगलम्।

X X X

सत्यं तासागनल सदृशं संयमासमाराज्यम्।

अन्धकार—

मोहान्धकारिनक्ष्यकारणस्य ।

मिशायस्मानेवनिशमेति नाशम।

सूर्य—

विद्यासतस्ततात्त्तेक्व विवेकभानो।

हाथी—

कण्द्रिपकुमभचारणिकुचंदन्ते मृगाक्षयामय।

मुख्यदृश्यभिमामनं गकलभकीविहारसोचिताम्।

करक (उपल)—

ये दृष्टे तव पत्तिन नितत्तिनीनां

कार्त्ता: करा जविमपलवनप्रवीणा।

भो वेत्ति ताफिमपवर्गपुरप्रयाम

प्रकृत्यकारणत्या करकानवथम्।

तुशार पात—

विवेकपड़केलकाननस्य तमेव नीहास्मुदाहरंति।
निम्ब वृक्षः
सर्वात्मनात्स्यन्तकरः विदितवा तं निम्बमेव त्यज दूरस्तोऽपि।।११३

जलः
सखे संतोषामभः पिब चपलतामुत्सुजानिजः।।११४

प्रचण्डवायु (आंधी) और घूलः
नो चेदीवनचण्डवायूवितत्वायोहोलीकणः
कलाम्पुदृशिशास्वतपथ: प्राप्नोशि जन्माठ्यीम्।।११५

राजः
शमधनमपहर्तु कामवैरश्चारः
विरचयति निकामेन कामिनीयामिनीयाम्।।११६

अन्धकृष्णः
ज्ञानज्ञानं प्रति निरादरशतामौपैति
अतः पतिष्यति स भीमवानचूक्षः।।११७

विष वृक्षः
भूः किन्तवसं साधुतरा प्रसूते निबन्धनं मोहविष्ठुमरस्या।।११८
तदानी मां कार्तिकविषयविषवृक्षं वसलिम।।११९

कीचडः
सोमप्रभावायामभा च यत्नं पुंसः त्यमः पद्दकमपाकरोऽति।।१२०
3. अप्यदीक्षित कृत वैराग्य शतक में प्रकृति चित्रण

प्रसिद्ध अलंकार शारत्री एवं वैयाकरण अप्यदीक्षित द्वारा 1637 ईं में विशिष्ट वैराग्य शतक नामक वैराग्यपरक शतक काव्य भी उपलब्ध है। यह काव्य भी अन्तःप्रकृति और अवस्थित विवाद की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। इस काव्य के अन्तर्गत प्रकृति चित्रण निम्नवत् विवेचनीय है—

(I) बाह्य प्रकृति चित्रण—

(क) कोमल पक्ष चित्रण—

इसके अन्तर्गत कमल बिल्व पत्र आदि का वर्णन अनेक स्थलों पर मिलता है—

निम्नांकित श्लोक में जल और कमल का उल्लेख द्रष्टव्य है—

नहयदिमरनारेकतुं धातुतु रोहस्तिः पद्मानि।।१२१अ

इसी भांति अद्वैतिकृत श्लोक में मोक्ष के साधन स्वरूप बिल्व पत्र का उल्लेख हुआ है—

कीणन्ति न विल्यद्वले: कैवल्यं पठवैतेृहूऽ।।१२१ब

(ख) कठोर पक्ष चित्रण—

इसके अन्तर्गत वायु, आकाश, पर्वत आदि का चित्रण हुआ है।

निम्नांकित श्लोक में आकाश, पर्वत और समुद्र का एक साथ उल्लेख हुआ है—

पतलु नमः स्फुटतु मही चलनतु मिलनतु वारिधयः।

अधरोत्तरमस्तु जगत्का हानिवितागसय।।१२२अ

(II) अन्तः प्रकृति चित्रण—

इस काव्य में मनुष्य की भिन्न-भिन्न प्रकृति का वर्णन विशेषरूप से देखा जाता है। एक स्थान पर राजा तथा लोक की भवयुक्त दशा का वर्णन दर्शानीय है—

राज्ञे विरहिते लोको राजान: पुनर्विभूषिते वेश्याः।

आ ब्रह्मण: कृतान्ता दकुतो भयमस्पृहाराज्यम्।।१२२ब

297
एक स्थान पर कामी जनो की अन्तर्दशा तथा वैराग्य से सम्पन्न सन्त पुरुषों के अन्तः स्थिति का वर्णन द्रष्टव्य है—
कामिनपरम भोग्ये कामसुखे धारणवहि श्रीभक्तम्।
सत्त्: समसुखसरका: सुधाशः सुकरान: इव ।।123।
इसी भांति सांसारिक पदार्थों में संलिप्त मूखों का चित्र वृत्त का वर्णन भी दर्शनीय है जिनका अनुवर्तन बुद्धिमान पुरुषों को भी करना पड़ता है—
अस्थायेऽभिनिविष्टाःमूर्खनस्थान एव संतुष्टाः।
अनुवर्तने धीरः पितरः इव कीड़ता बालाः।।123।
एक स्थान पर सबके प्रति सम भाव रखने वाले संतों की प्रकृति द्रष्टव्य है—
Pतर्ने सन्त: सममुक्तसर्वर चापकर्तरि च।।124।
इसी भांति काम सुख के अभिलाषी युवकों का वर्णन देखिए—
अनधिगते कामसुखे कालनयथा प्रवर्तते तस्यः।
एवं ब्रह्मसुखस्रवणे प्रवर्तते कोऽधिपि भाग्यसाधयाः।।125।
पुनर्वचन, एक स्थान पर उन स्वार्थ परायण मनुष्यों की चित्र वृत्ति का सुंदर वर्णन है जो मृलु शय्या पर पड़े हुए अपने सुहृत्त को देखकर भी अपने ही स्वार्थ के विषय में विचित्र और होते हैं—
कामे गतिरिति पृथ्विति चरमव्यसेशपि ये: स्वार्थम्।
तस्य जनस्यापि कृते पापः पृष्टि तु दुःखस्य।।126।
निम्नाक्तिक रोलें में अपने माता—पिता से ब्रोह वस्त्र हुए भी अपने पुत्रों को पितृभक्ति का उपदेश देने वाले धर्म विमुख और स्वेच्छा चारी पुरुषों का वर्ण है—
पिलुः: कलहायन्ते पुत्रानन्याययमन्ति पितृभक्तिस्य
परदारानुप्यत: पतन्ति शरस्त्राणि दारेशु।।127।
एक स्थान पर मृलु के मुख में जाते हुए भी अपने पुत्र आदि में आसक्ति रखने वाले गृहस्थों की मनोदशा का वर्णन देखिए—
प्रायोमुहायति चेत: प्राण भृत: प्राणनिर्गम्य वसरे।
पुत्रेण यदि न मुहायति पुत्रानेव समर्थिते।।128।
अथोलिकतिर रोलें में विविध वृत्तियों से ग्रसित मनुष्य की व्यक्तिगत मनोदशा का चित्रण द्रष्टव्य है—
प्रणमिति परिसन्तिर राधिति (प्रणि) पतिति सदा परिश्रमिति।
एक स्थान पर कामी जनो की अन्तर्दशा तथा वैराग्य से सम्पन्न संत पुरुषों के अन्तः स्थिति का वर्णन द्रष्टव्य है—
कामिजनपरम भोगे कामसुखे धारयन्ति वीभत्सम्।
संतः: शमसुखरसिका: सुधाशन: सूक्ष्रान्न इव॥१२३॥
इसी भांति सांसारिक पदार्थों में संलिप मूखों का चित्र वृत्त का वर्णन भी
दर्शनीय है जिनका अनुपातन बुद्धिमान पुरुषों को भी करना पड़ता है—
अस्थानेनिनिविष्टान्मूर्खोऽनस्थान एवं संतुष्टान।
अनुवर्तने धीरः पितर इव कीठचा बालान॥१२३॥
एक स्थान पर सबके प्रति सम भाव रखने वाले संतो की प्रकृति द्रष्टव्य है—
वर्तने संतः: सम्मुक्तकररि चापकररि च।॥१२४॥
इसी भांति काम सुख के अभिलाषी युवकों का वर्णन देखिए—
अनजितात कामसुखे कालनयथा प्रवर्तने तर्यण:।
एवं प्रभुमुखेषुपि प्रवर्तते कोषपि भाष्यवशात्॥१२५॥
पुनर्वचन, एक स्थान पर उन स्वार्थ परायण मनुष्यों की विभिन्न वृत्ति का सुन्दर
वर्णन है जो मूल्य शायया पर पड़े हुए अपने सुहृत को देखकर भी अपने ही स्वार्थ के
विषय में चिन्तित होते हैं—
कामे गतिरिति पृष्ठति चरमवायुस्यपि यः स्वार्थः।
तर्यक जनस्यापि कृते पापः पापान्ति कृत्यता।॥१२६॥
निम्नाकृति शलोक में अपने माता—पिता से दोष वर्ते हुए भी अपने पुत्रों को
पितृभवित का उपदेश देने वाले धर्म विमुख और स्वेच्छा चारी पुरुषों का वर्णन है—
पिलृभवः कलहायते पुत्रान्तव्यायन्ति पितृभवितम्
परदारानुपप्तत: परिवति शास्त्राणि दारेञ्ज॥१२७॥
एक स्थान पर मूल्य के मुख में जाते हुए भी अपने पुत्र आदि में आसक्त
रखने वाले गुह्यस्थों की मनोदशा का वर्णन देखिए—
प्रायोमुहाति चेत: प्राण भूत: प्राणनिर्मिति वसरे।
पुष्पेन यदि न मुहाति पुत्रानेव स्मरणित।॥१२८॥
अधोलिखित शलोक में विविध तृषणाओं से ग्रसित मनुष्य की व्याकुल मनोदशा
का चित्रण द्रष्टव्य है—
प्रणमति परिसार्यवति (प्रणः) पतति सदा परिप्रेमति

298
आविष्ट इव पिशच्या पुरुषस्तृणावशं यातः।।

इति भौति अपनी पत्नी की अकारण ही उपेक्षा करने वाले पर सत्री लम्पट कामियों के अन्तर्दशा का विचार देखिए—

वन्ययेवाःहुस्तरुणी जरलीति परिवकज्ञि बहुपुत्राम्।
अभिनिन्दत्वत्वसुतां का गृहिणी कामिनोहृदाय।।

अन्यत्र भी एवं लम्पट मनुष्यों का विचार द्रष्टव्य है—
यान्ति श्रममहक्तदारा द्वे भार्य नेति फृतदारः।
ते परदारा नेति स्त्रीमिस्त्रुष्टान्न पश्याम्।।

अथवा

दुःखोपार्जन्ते पाल्यस्ते प्रत्यहं च लाल्यान्ते।

दामा: स्त्रियों विमृग्धरूपमुज्जाना: सुखं विगुणम्।।

एक स्थान पर भोगी एवं योगी तथा संसारग्रस्त पुरुषों अन्तः स्थिति का एक ही साथ उल्लेख द्रष्टव्य है—

भोगाय पारमाणवा योगाय विवेकिनां सार्वरमिदम्।
भोगाप योगाय च न कल्यते दुर्विद्धानाम्।।

सांसारिक भोगसक्त मनुष्यों की मोहग्रस्त प्रकृति के विषय में कहते हैं—
अयुक्त निनियत वापि प्रदिशान्तु प्राकृतयाः भोगाय।
क्रीणान्ति न विल्ययस्ते: कैवल्यं पञचश्चृङ्गादः।।

अन्यत्र भी कहा गया है—पुत्रा इति।।

यही नहीं गृह त्यागी योग साधना निरत मुनिजन की प्रवृत्ति किस प्रकार लोकेऽणासे आवबद्ध हो जाती है इसका भी उल्लेख हुआ है—

उपरस्थमिति भवासाम्पुर्णयो नास्तन्वति न पिविण्ति
स्त्रूपान्ते सुजने: किं कण्ठे कुर्वति कनकपासामि।।

सांसारिक विषयों में निरततित्व वाले मनुष्य परमार्थ साधना पथ पर आरूढ़ नहीं हो पाते इसका वर्णन भी द्रष्टव्य है—

कामं जनान: समयसे कैलासविलासवर्णनावसरे।
साधनकथनावसरे सार्वकुर्वति वक्त्राणि।।

एक स्थान पर कुलवधुओं को दूषित करने वाली कुलटा स्त्रियों की प्रकृति का वर्णन द्रष्टव्य है—
(III) प्राकृतिक उपादानों का अप्रस्तुत विधान–

इस काव्य में वृक्ष, विद्वान, पवन, अम्ब आदि का अप्रस्तुत रूप में विधान किया गया है–

निम्नलिखित श्लोक में जल, पुष्प, फल और वृक्ष का अप्रस्तुत रूप में वर्णन द्रष्टव्य है–

पुष्पांशु पुरुषे दलितेर्पुष्पांशु पुष्पं फलं च तरवं इव।
वतन्त्र सत्या सम्मुपकर्तरिच चापकर्तरिच ।

निम्नाकित श्लोक में वृक्ष द्वारा स्पष्ट तथा उल्लेख्य से अन्य प्राणियों का वर्णन द्रष्टव्य है–

अन्नामायेव गृह्यः शालिमिर्नायि शालयो वृक्षयः।
शृंग स्तपसे तेजुः प्रसीद्धये तत्तपश्चर्तु ।

एक स्थान पर गंगा जल के साथ ही मद्राघ घाट में स्थित कुशामुष्टि अप्रस्तुत रूप में वर्णित है–

आ भ्रमसः शिवसः चार्यं कलिमलमलीमसः वरुणः।
विफल गंडः गाजलम्पशये मद्राघः दर्भुमुखितिविव।

इसी भांति अन्य प्राकृतिक उपादानों का अप्रस्तुत विधान भी निम्नवत् है–

दो चन्द्रमा–

चक्षुदौष्ट्ये जायति चन्द्रचित्वं कुरुयातु ।

समुद्र–

रामविद्युमोदरमसे संसारार्थाम्बु वी निमंजसे।

X X X

एताय नीरो जाति ब्रह्मानन्दार्ण वस्य कणः।

X X X

अपिरतराद्गसंकुलमेष्टिति विधानान्दार्ण महताम।
तालाव—

चुलुकेनाम्भ: पातुं खण्डितय: किं तटाकोपि। 147

बर्फः ओर अर्गिन—

तुहिनथाणिनिवृल्ल: नहि वेशमानि पावको देय। 148

पर्वतः, तृणः ओर प्रचण्डः वायु—

तृणवद्धमनि चपलः स्त्रीनामनि चण्डमारूते चलति
धरणिदर्श इव सन्तसत्र न किं चित्रकम्पन्ते। 149

विद्वृत—

अवयन्नि तु विस्पष्टं तदितिमिवहे शिरससमूहा। 150

पवन—

विस्मानितसांसर्गान्मृजे तत्तवमेकपदे। 151

महान अंधकार—

सङ्घरसि केदारी संसारभे महत्तमसि। 152

X       X

तमसावृत्तालेखः साक्षाद्वृते च नायवन्त्यर्थान्। 153

अंधकार का अप्रसम्त विद्वान अन्य भी अनेक स्थलों पर हुआ है। 154

सुधा ओर सूक्ष्रानन—

कामिजनपरम्परोऽग्ये कामसुखे धार्यति वीमतसम्।
सत्ता: शामसुखरसिका: सुधासन: सूक्ष्रानन:। 155

ईश्वु दण्ड—

नहि शरसामिलिष्टि मिक्कोऽ: काण्डानि पूजयत०। 156

सद्योत—

अष्टि हृष्णिनि जना: कथमवलम्ब्य ज्ञानविरोधात। 157
4. भामिनी विलास (शान्त विलास) में प्रकृति चित्रण

पणिलत राज जगनाथ कृत भामिनी विलास का शान्ति विलास एक उपदेशपरक विलास है जिसमें सांसारिक विषयों के प्रति वैश्वम और ईश्वर के प्रति भक्ति भाव को विषय बनाया गया है। इस प्रकार उपदेश पर राते होने के कारण इसमें बाह्य प्रकृति का चित्रण अत्यतम मात्रा में उपलब्ध होता है। अवश्य ही इसमें अन्तः प्रकृति चित्रण के साथ विकिर वातावरक्तिक उपादानों की बहुतता दिखलायी पड़ती है।

(1) बाह्य प्रकृति चित्रण—

(क) कोमल पक्ष वर्णन—

इसके अन्तर्गत कवि ने नदी बन तथा चाटक गो आदि प्राणियों का वर्णनकिया है। निम्नलिखित श्लोक में कवि यमुना नदी का अत्यत सुंदर वर्णन करता है।

स्मृतिःपि तरुणात पदःकरुणया हरसती नृणा—
मम्मम्मम् गुरंतुलिष्यं चलिता शतरीविद्युताम्।
कलिन्दगिरिनंदिनी तत्सुद्रमालिभिनी
मदीयमति चुम्बिनी भवति काव्यपि कादिविनी।।।

इसी निम्नलिखित श्लोक में यमुना तटवर्ती बन तथा धर्मशास्त्र का रमणीय वर्णन द्वारा है—

कलिन्दनगगनन्दिनी तदवनान्तरम्भासयनः
सदा पस्य गतागतश्रमवर्त्न हरस्तु प्राणिनामू।।।

एक स्थान पर गंगा नदी के किनारे सुख पूर्वक श्याम करने का उल्लेख किया गया है—

अथ्या सुखं श्रीप्रति निकते जागरिति जाहन्यी जननी।।

अधोराती श्लोकांश में चाटक आदि रमणीय पक्षियों का उल्लेख किया गया है—
सन्त्यायुस्मशुज्जगति बहवः पक्षिणेन रम्य्रूपा—
स्तेषामध्ये मम तु महती वासना चाटकेष्यु।।।

इसी माति एक स्थान पर श्रीकृष्ण द्वारा गोचारण प्रसंग देखिए—
रे चेतः! कथयापि ते हितमिदं वृद्धावने चारयन्।
वृद्धाः कोद्धपि गवाननवामयुदनिमो बन्धुर्न कार्यस्वयः।¹⁶²

(ख) कठोर पक्ष वर्णन—
प्रकृति के कठोर पक्ष का वर्णन कहीं कहीं दृष्टिगोचर होता है। एक स्थान पर भ्रमरों के गुज़ार से युक्त मदमात हाथियों के समूह का वर्णन किया गया है—
शिवो य मा संतु क्षणमधि च मादुदगजघटाः।
मद्राम्यदशुम्। गावलिम्कुरश्राद्वः कारसुवर्गाः।¹⁶³
इसी भाषि निम्नाक्षर श्लोक में सुमेश पर्वत मलय पर्वत एवं समुद्र का एक साथ वर्णन द्रष्टव्य है—
आ मूलादल वानोर्मलयवतितादा च कूलात् पयोधे।
यास्तः सति कायाग्रणयनपत्वरस्ते विशाङ् क वदन्तु।¹⁶⁴

(II) अन्त: प्रकृति विचरण—
इसके अन्तर्गत विषय प्रकार के मनुष्यों की विशेषकर ईश्वर के भक्त एवं ज्ञानी पुरुषों की प्रकृति विशेष रूप से वर्णन किया गया है। निम्नाक्षर श्लोक में यह वर्णित है कि भगवान की उपासना से भक्त अतिशय आनन्दित होता है, कवि रवि र ते कहता है—
सत्यमूवहि मदीयजीवः। भवताः भूयो भवे भ्राय्म्यता।
कृष्णेत्यक्षरयोररघ्ममुरिमोदुः। क्वचित्तलक्षित: ।¹⁶⁵

X X X
तान्द्राकाशार्थि वहमलामाधुरियुद्विगस्तीम्।
कृष्णेत्यायाः दक्षय रसने। यद्धधि लङ्का रसना।¹⁶⁶
इसी कम अधोक्ति स्थलों पर यह भी बतलाया गया है कि भगवान के अप्रतिम (लोकोत्तर) सौन्दर्य से भक्त गणों की विशेष आनन्द की प्राप्ति होती है—
अम्बायमिलिंदिरे निषिद्माधुरेमन्दिरे।
मुकुन्दमुखविन्दिरे चिरमिद्वचको रायस्ताम्।¹⁶⁷

X X X
नयनानन्दसन्दौदक्षुस्तिकारण क्षमा।
तिरियत्वाशु सन्तापः कारस्य काव्यविनी मम।¹⁶⁸

X X X

303
प्रथमद्वृत्तिवर्णण जड़, घजजानुरुनामुभिन्द्यानि।
आलिछुऽग्रथ्भावना में खेलतु विश्णुमुखवजाशोभायाम्।

इससे समबिंधित अन्य स्थल भी दर्शनीय है।

उपात्क को प्रकृति सर्वात्म समान दृष्टि वाली हो जाती है क्योंकि उसे सभी जगह परमात्मा दिखाई पड़ता है किव कहता है—

मलयानितकालकट्यो: रमणीकुन्तलमोगिमोगोऽ।
श्वमवातमुशोरिततरा मम भूयात् परमात्मनिशिचित्।

इसी प्रकार ज्ञानी पुरुष को ब्रह्म में अखण्ड आनन्द की प्राप्ति होती है इस समबन्ध में किव का कथन है—

स्वयं वाण्सिति चेन्निनर्गलसुखे चेतस्तदा सुप्तताम्।

इस विलास के प्रारम्भिक श्लोक में विवेकशील पुरुष की विषयों के प्रति विरक्त नन: स्थिति का वर्णन किया गया है—

विशालविषयमावतीललयग्नधावानल—
प्रृव्वरिरिचावालीविकलितम् मद्यम् नन:।

भगवान के भक्तों की निमित प्रकृति होती है यह निम्नांकित स्थल से स्पष्ट होता है—

सत्तापिरः कक्षकलभिसिधावधावन्धराताते हृदय।
असित मम किरसित सततनन्दकरुणाः प्रभुः परमः।

इस विलास में भगवान की प्रकृतिगत विषयों तथा भक्ति की कहते ने उल्लेख किया है। उदाहरण के लिए निम्नांकित श्लोक भगवान की अतिशय दयालु प्रकृति वर्णित है—

इत्यागश्वात्शालिनंपुरस्तिस्विवेषु मामित्रतत्—
रत्नतो नासित दयानिधियुगुष्टे! मलो न मतः पर।

इसी भांति एक रथार्थ पर भगवान का पावनत्व प्रकृति वर्णित है—

gणिकाजामिल्मुख्यान्त्र भवता बताहमापि सीदन्।
भवमरुगल्ल! करुणामूल्लू न च सर्वस्वोपोक्ष्यः।

निम्नांकित श्लोक में दुख सर्वथा ईश्वरलु प्रकृति के होते हैं इसकी अभिव्यज्ञाना की गयी है—

मदश्शु! मा कुरु विषादमनादरेण।
मात्स्ययूपमनमां सहसा खलानाम्।
एक स्थान पर प्रायश्चित्त विद्वानों को भी ईर्ष्यालु बताते हुए अधोलिखित श्लोक में इनकी इस प्रकृति का चित्रण द्रष्टव्य है—
विद्वानों वस्तुधात्ते पश्चातः श्लायासु वाचयम्।
एक धार्मिक पुरुष की अविचल धर्म निष्ठा का परिचय हमें निम्नाक्षरित श्लोकों में मिलता है—
सापत्य विलयमेतु राज्यलक्ष्मी—
रूपरिः पतन्त्रथवा कृपाणधारा:।
अपहरतुतां सिद्धः कृतान्तो
मम तु मतिन्मननागपेतु धर्मांत।।
अष्टि वहलदहनजालमूर्ह्तिः शिस्यं मिनस्तरधमलु
पातयतु वासिस्थारमहमणमल्लन किशवदमाभे।।
निम्नाक्षरित स्थलों पर महाकवि की गरमिमयी प्रकृति अभिव्यक्त हो रही है—
मृदीकामधुर्यतर्यमसृणसस्मरीमधुमोहमायमार्जां
वाचामाचायकौताय: पदमनुभवतुद्कोशस्य धन्योमदन्यः।।

x x x
गिरान्देशी वीणागूरणहितादनदरकरा
यदीप्यानां वाचामन्तमयमायमाति रसम्।
कवस्तयाकृत्यः श्रवणसुभममण्डलंतपते
रथुन्वन् मूद्रानमनृपसुरथ वास्यमयस्यपति:।।

x x x
आर्ये धार्यति कस्य लास्यमहुना धन्यस्य कामालस
एवर्मामा धर्मारुपियमधरणं वाचो विलासो मम।।

इस सबच्छन्द में अन्य श्लोक भी दर्ष्टव्य है—

(III) प्राकृतिक उपादानों का अप्रस्तुत विधान—

इस विलास में भी प्राकृतिक उपादानों का पर्याप्त संख्या में अप्रस्तुत विधान हुआ है। इसके अन्तर्गत इसमें वन, दाबानल, अम्न, बन्द्रमा, तमाल, वृक्ष सुधा आदि को अप्रस्तुत रूप में वर्णित किया गया है, जिसे हम निम्नवत् देख सकते हैं—

सुधा —

305
वाचा निर्मालया सुधामधुरया यानाथ शिक्षामादा।

वन—
विशाल विषयाड़विलयलग्ननदवाणल।

X X X
अपारे संसारे विषमविषयारण्यसरणो।

दावानल—
विशाल विषयाड़विलयलग्ननदवाणल—
प्रसृतवरशिखावलीविकलितम् मदीयम् मनः।

चन्द्रमा और चंद्रकोर—
गुकुलमुखचन्द्रे चिरमिदव्य कोरायताम्।

कमल—
अये जलधिनिनन्दीनन्दीन जालम्बन।

X X X
आलिङ्ग्य भावनामें खेलतु विष्णौमुखाब्रजो भायाम्।

इससे समविधि अन्य स्थल भी दृष्टव्य है।

प्रज्वलित अभिन—
ज्वलज्वलनविरत्वामदं गुरुम्।

X X X
स्फूर्तकलाशमहीरहामुरुतज्वलाजाटात्: शिखी।
इस समवेत में अन्य श्लोक भी अवलोकनीय है।

प्रातःकालीन कमल—
प्रभात जलजोनमदूरस्मिरस्वरदं श्रेष्ठ।

विद्युत से युक्त मेघ समूह—
स्मृतापि तरुणातपदं कुरुणया हरन्ती नृणा—
ममदं गुरुतुविषां वलयिता शालिविंशुताम्।
कलिन्दगिरिनिदिनोतसुरुशुफु लगुभिनी
मदीयमतिचुम्बिनीभवति कादपि कादम्बिनी।

लताओं से परिवेष्टित तमाल वृक्ष—
लतावलिस्तावृतो मधुरया रूचा सम्भूतो
ममाशु हरसु श्रमानितितरांत्मालदुः।।197

अंधकार—

मम स्वान्तधान्तन्त्रित्यतु नवोनो जल्धरस्।।198A

X X X

विध्वान्तर्धातमम् धुरम धुरावधिवितिकदा
निमग्न: स्याय्युक्कस्याधिनजन नवनमपन्यायामनुदरूपो॥।198B

X X X

कण्ठे लग्ना हरसि मितरं यामुनात्स्वात्त्वालभाग॥।198C

चांदनी—

जगज्जालभोतनामायावसुधाविनिढलाय॥।199

बादल—

मम स्वान्तधान्तन्त्रित्यतु नवोनो जल्धरस्॥।200

X X X

निमग्न: स्याय्युक्कस्याधिनजन नवन भर्यायुदरूः॥।201

इससे समबन्धित अन्यत्र स्थल भी द्रष्टव्य है॥।202

वर्षाकालीन मेघ—

प्रावृप्तेऽइ ववासिरो मेघ वेदनां हरसु वृष्णिवर्षेऽ।।203

ग्रीष्म काल का प्रचंड सूर्य—

ग्रीष्मचंडकरमण्डल भीष्म ज्वाल संसरणातपितमूर्तेः॥।204A

ग्रीष्मकालीन प्रचंड धूप—

भवग्रीष्मप्रीतातपिनवहस्तपि तपि ज्वाला॥।204B

तमाल वृक्ष—

सममतात् संतापं हरिनवतमालस्तिरयतु॥।205

X X X

तरुनितरसुतूः वा तमालः॥।206

प्रियंगु लता संयुक्तः—

आलिक्षुगतो जलधिकन्यकया सलीलम्
लम्न: प्रियंगु भुलतायेत तरसस्तमालः॥।207
रसोध—

महर्षिनं खर्जुमातृत्वस्ति। कलिनामूले न च सर्वाध्योपक्रमः। ॥ २०८

वृक्ष—

महम्मति तस्मात्वात् सर्वत्र विविधशैलम्। ॥ २०९

पर्वत—

क्रमम् पापमहीमित्वाम्। ॥ २१०

अंगूर—

तांत्रिकाधारिः विरहमातामुद्रीगर्गरत्नीम्। ॥ २११

मृद्दीकामधयनिंयामसूपं सादतीमभौमभौमायम्यामायः। ॥ २१२

शीतल अमृत चरोर—

विशुद्धममदिविनिरप्वताहवसत्सरसि नैराश्यशिशिषे विगाहते दूरीकृतकलुषजाला। सुकृतिः। ॥ २१४

समुद्र—

तीथे ममज्ञव्यशुमलघ्ये पारसम्कोमाम। ॥ २१५

मंदिर—

निमग्नानां यस्य व्रतिमन्धिराधूर्णितदुःशा। ॥ २१६

भूपाला: कबलाविलासबदिविनीमलभदर्धूर्णिता। ॥ २१७

मरक्क मणिवर्त—

मरक्कमणिमेदिनी धरो वा। ॥ २१८

मरक्कमणिज्योत्सना वा स्यायन सा मधुराकृति। ॥ २१९

यमुना नदी—

तर्पितनया किं त्यादेश: न, तोयमयी हि सा।
मरकत मणिज्योतना वा स्थानन वा मधुराकृति।
इति रमणः कायच्छायाविलोकनकौशुकः
वनवसितमि: कै: कैरादी न सन्निदिष्टे जने:।²²⁰

विजली और लता—
चपला जलदायुता लता वा
तरुमुख्यादिति संसाये निमगन्।²²¹

पशु—
वचतस्यायकर्ष्य श्रवणसुभगममणिण्डतपते
र्घन्वन् मूद्रायन्त्रपुषुशख वाण्यमणुपति:।²²²

कमल श्रमर और पराग—
कायाविन्दमकरस्य मधुकरताना
मासेषु धार्यतितमादःकति नो विलासान्।²²³

मधु, द्राक्षा और अमृत—
मधु द्राक्षा साक्षादमृततथ वामा धरसुधा
कदाचित् केमाशवन्तु खलु विदधोर्नापि मुद्यम्।²²⁴

द्राक्षा, हथु और माज्ञेक—
माधुर्यार्थी सुर्यद्राक्षाकेशुमाज्ञेक कादीनाम्।
वन्धौ च मधुरीमणिण्डतराजस्य कवितायाः।²²⁵

पल्लव—
दिल्ली वल्लभपाणिपल्लवतलो नीतनविनं वयः।²²⁶
5. वैयाग्य धनद शतक में प्रकृति चित्रण

कविवर धनद राज प्रणीत वैयाग्य धनद शतक (15 वीं शत) एक अदितीय
उपदेश परंपरा का काव्य है। इसमें योग मार्ग से सम्बन्धित योगिक प्रक्रिया पर विशेष वल
दिया गया है और इसी कारण इसमें बाह्य प्रकृति का वर्णन अत्यन्त होता है।
इसके अन्तर्गत प्रकृति चित्रण को निम्नवत्त देखा जा सकता है—

(i) बाह्य प्रकृति चित्रण—

(क) कोमल पक्ष

इस शतक काव्य में गंगा नदी वन वृक्ष आदि का चित्रण यत्र तत्र दृश्यित
होता है निम्नाकित श्लोक में पुष्पप्रद वन एवं उसमें विश्लेषण सघन वृक्षों की शीतल
छाया का वर्णन किया गया है

पुष्पपरश्रये कदाचितल्लुकवननिरिष्क्ष्यथा जातशीतः। \[227\]
एक स्थान पर चन्द्रमा उसके कलंक आकाश, सूर्य और तारागण का एक साथ
उल्लेख हुआ है—

शीतलावृणीमध्ये हरिणमिश्रितमिल्लीवल्लसः शिरसे
जातः कालो जरावविचरसमयपुमानिनिश्वकर्मकर्मकावशी।
आकाशश्रथुमध्ये पलितकबलित भास्वता साधकोन
छिन्नं संज्ञायामां प्रसरति परितो रोम तारागमनशी। \[228\]

इसी भावति आकाश गंगा तट का वर्णन देखिए—

पादवं कुरुणां हरचरणसुधे: (ि) सितमारोपयाम
सितधामो वीररागंगश्रपुपुष्चुनीनीस्तीरे वसाम्। \[229\]

(ख) कठोर पक्ष चित्रण—

इस शतक काव्य में सूर्य चन्द्रमा सुमेल पर्वत, पर्वत विवर आदि का वर्णन है।
एक स्थान पर सुमेल पर्वत, क्षीर सागर और साथ—साथ शेषाग आदि
विषय तरंग का भी वर्णन किया गया है—

tलपेवज्वले शायलोरचलजयलवप्रात निद्रासमाघे
हैमार्धसकेवे सहजपरिणातिविव्रत: पत्रमवज़्गे।
शोभाम पद्मु: कवामें विश्वविश्वा: पीड़नाधुक्ष्यसांतः
सद्य: क्षीरोदपूरे फणिपिशायने सुप्तपौत्तमवस्य। \[230\]
एक स्थान पर दुर्गम पर्वत विवर में निवास का वर्णन किया गया है—
भिन्न भिन्न प्रारंभ व्यक्तित्वाथि कदा भिन्नकार्यान्मनो में
कर्मब्रह्मविद्वान श्रीधरविवर वासमीहा महेश्वर।  \(231\)
निम्नांकित स्थानों पर भी सूर्य और चन्द्रमा का वर्णन दर्शनीय है—
काँठाताबद्दरशी शास्त्रिदिस्करावेद निर्माण पाने
पुष्प पापी विविकरस्तुलनितुमसकृत्षग्नवेहकोथिपि।  \(232\)

(II)
अन्त: प्रकृति चित्रण—

वैराग्य धनं शतक काव्य के उपदेशार्थ होने के कारण इसमें भिन्न—भिन्न
प्रकार तथा भिन्न भिन्न अवस्थाओं में विद्यमान मनुष्य की आन्तरिक प्रकृति का अयत्ता
स्वाभाविक एवं सुदृढ़ चित्रण किया गया है।

निम्नांकित स्थानों में शैव योगी आदि मानव जीवन की भिन्न—भिन्न
अवस्थाओं की मनोदशा में होने वाले परिवर्तन का चित्रण किया गया है—
पितृप्रशासीशिष्ये गतवति विमंगं शैवेण तत्पुरुषात
ज्ञातं नारीपु परशालरुणिगमि मते मूलभूतक्रियान्धिमश्य।
पुनः प्रेम स्वविष्टं यद्वाध्यात्म पतंग नाशो न भावी
भावी कैस्तिनायाम: पदमविकमदानन्दकर्मद तदन्तः।  \(233\)

इसी भाव से चलकर एक स्थान पर इसी का अयत्ता स्पष्टता के साथ
वर्णन करते हुए यह बतलाया गया है कि शैव अवस्था में गुम्धता, युवावस्था में
अभिलाषा और वृद्धावस्था में विषयों में अनुभव की वृद्धि हो जाती है—
मुख्यतः शैवोऽये प्रतिविशालि पुनर्यौक्तिके भिन्न्यार्था
ये जाता भोग हेतु: प्रतिवृत्ति तत्तो नर्तता वानरीव।
ततैः वार्थकीये प्रसर्षित विषयोऽसो विषयाय एव
प्रायोवाक्याधिकं व्यभिचरति मनोप्रकृति यां यत्र जाताः।  \(234\)

मूढ़ जुड़े विषयों की स्वभावत: सांसारिक विषयों में प्रवृत्ति होती है इसे निम्न स्थल
पर देखा जा सकता है—

विषयात्को निवर्तत मूढः।  \(235\)

सदभाव से ही एक पुरुष सदैव दम्म का आचरण करता है इस विषय में कवि
कहता है—

विद्यार्थ्यो न दम्मो विषयीप यष्टुष्टं नैव दम्म: कदाचिच्छया सत्तामो
न दम्मो ब्रतविधिनिमयो नापि दम्मस्तपोया।
विज्ञाय ज्ञान दम्मो वितरणमधिक नापि दम्मो धनानां
भावनेकन हीं निखिलमिदमहो दम्मुद्रां वहाम॥२३६

मृत्यु का भय सामान्यत: सभी मनुष्यो को होता है इस सम्बन्ध में निम्नांकित
श्लोकांश अवलोकनीय है–

उद्धवोधोध सिद्ध शनसनगतिवशादिभद्धमाना परान्त
हारानीता मृतांश प्रशासितमरणज्ञानि: शंदक्षाल।॥२३७

अधोलिखित श्लोक में विस्तृत पुरुषों की प्रकृति वर्णित है–
आलापो वीतरगैरिषयपरिणते कनित्तन चिन्ता
साक्षात्कारो रुजाया जननमरणयोगमेषु प्रभावीः।
सत्त्वोऽद्वित: सत्वाविद्द्ममिलतहो नस्यं चेति बोधो
हे पुरुसेयजनन्यायपि धनतनयस्त्रीवियोऽगुणः कदाचित्।॥२३८

योगी पुरुष के शान्ति, दम, यम, शील, बोध, सत्त्वो आदि विविध प्रकृतिगत
गुणों का वर्णन निम्नांकित श्लोक में हुआ है–

शान्ति: काचित्कुमारी दमयमकुलजा शीलवीरक्रमः।
पित्रा बोधेन दत्ता सम्पुपर्णिष्ठा मानिनेस्मैवराय।
वीरं सत्त्वोऽद्वितेऽविबधगृहकुलशीतीतिः प्रसूता
ग्राह्योऽयता: कनकपरिणांशैलं शाश्वेत: शाकपाकः।॥२३९

पर्वत की कन्दराओं में योगी पुरुष का अतिशय वैशार्य की प्राप्ति होती है इसका
वर्णन अधोलिखित श्लोक में किया गया है–

तद्वचित्तं विरक्तं यदि वस्तितिर्यं कन्दरा बन्धुवाच।॥२४०

एक स्थान पर त्यागी पुरुष की शान्तिमयी स्थिति का वर्णन है–

संसारस्यस्य मोक्क विपिरितसुकुसरो वर्णितोदयं विवारत्नानात्रापेक्षा:।
सहाया धनमयि न हितं वासस्य नापि चिन्ता।
नाहारारम्भदम्मो वस्तितिर्यं तथा नो न शायोपताप:॥२४१

पाल्या: पुज्या न दारा मणि कनकममैवृृ।

अन्यत्र भी यह वर्णित है कि प्राकृतिक अंगलों में निवास करने से चिह्न में
शान्ति आती है और विपुल सुख प्राप्त है–

पादपन्भु गुरुः हरचरणद्वैः चित्तमरोपयायम्

312
सिद्धान्तो विद्वानज्ञसमपुरस्कृतीनीरसमवासमः।
भित्राणि प्रार्थ्येव रक्षितपिपि कदा भित्रकार्यान्तनो में
कर्मचंद्रोद्यमाय भित्रिधिविवरे वासमीहामहेद्या।

एक स्थान पर यह बतलाया गया कि विरक्त पुरुष पर काम विलास का
प्रभाव नहीं पड़ता--
केवल बाला वराकी तरलयति दृश्य मन्दमानन्दहेद्यू
संशोधे वेति विते भवति न पुरुषः कोऽयमान्यः प्रकारः।

ज्ञानी पुरुषों की सर्वत्र समान दृष्टि रहती है इस सम्बन्ध में निम्नांकित श्लोक
उद्दरणी है--

लिम्पन्तरसस्थनेन प्रतितनुसविषेषः कष्टकैर्या तुदंतः
सान्तव वा रतुकः प्रतिरिपकथाया दोषमुद्भवायन्तः।
ग्रासे ग्रासे नयनं मधुरमय विषं निक्षिप्तं कथामे
ते ते चेते समानः सहजपरिणतज्ञसिद्धि गतार्थः।

x x x

अंतःपतस्खंडेषा परिणितविरसः कान्तस्यामि विलासा
आदायते वियोगे परिचयमधुरृे समगे सज्जननानाम।
विद्यार्थने प्रपनः स्वाभवपूणकाध्यापकापेतज्ञानो
वर्षकं तत्किसमाते परिवर्यभवे यथेऽ सर्व समाः स्वः।

वैसाध्य होने पर संसार श्री, पुनः धनादि के प्रति पूर्णतः दोष वुद्धि हो जाती है--
कात्ता काचित्तुकलीना सिंहत सरसमुखों भीतिहेतुः पिशाची
पुनर्न्द्रोपमृणूडः दय दहनधिया दृष्टो मौचनीयम।
बन्धुर्यापदमः सुहुद्धि नितरां घातुको दर्षुवर्गः
प्राप्ताः नापापगर्भिनि पुजस्युनि जन्म विभिन्नितहेतौ।

एक स्थान पर यह बतलाया गया है कि विरक्त पुरुष सदैव पाप और पुण्य
से भिन्न तृतीय मार्ग का अनुसरण करते है--

पुण्यार्थास्य सः सुप्रभातिनगरस्वाह पत्थः प्रकाषः
पापेनात् कृतां प्रतिवरसति मुखोध्यान्तस्क्राकान्तियोऽिरः
योध्यं पन्थास्मृत्वः कलिप्य पुरुषप्रस्थिति क्षणभावो
यान्त्र तेन प्रयत्नादुब्धय परिभेद्यस्व साध्या सुधीपि:।

313
निम्नालिखित स्तोत्र में यह वर्णित है कि शारीरिक विचल वाले पुरुष को ही वास्तविक सुख की प्राप्ति होती है अन्यथा सुख का उपलब्धि भी नहीं मिलता—
भूमः भूयरत्नुप्रव मधुमेधविधिरत्ना यज्ञवरते शांतता
तसेवथं वा कवान्तं परिहृत विषमा कथुवर्ग विहाय।
तीर्थं तीर्थंधिरप्रयतनं तपस्या पोष्या धर्मं यतथं
यावचेतो न शांतं सुखलक्षणिका दुर्लभमात्वदेव।।

एक स्थान पर यह बताया गया है कि विश्वक शारीरिक की कामना सन्तोष और ज्ञान से युक्त होने पर गृहस्थ आश्रम में भी जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है—

गारस्यं नाम धर्मं भवति द्यदि महानुबिर्विधाद्वियते
जातामेवं विवेकात्मारिषयत सुखं शार्निकम शूमारूम।
देहे गेहे चरतस्तो जनयत च सुखं ज्ञानमानन्दनं
सत्यं संतोषयनो मरुदसिद्धियता नववर्त्ता ध्वनीनानि॥

ब्रह्म साक्षात्कार होने पर संसार के मिथ्यावर की प्रतीति होती है—
साक्षात्कारो हयमुष्य प्रथयति सकलं विवशवातं हि मिथ्या
कथुवेदन्तनसतायद्विहितमनिशं क्षोद्मात्राश्रयेण॥

ब्रह्म ज्ञान हो जाने पर संसार के प्रति विश्वसन को साथ ही साथ सभी एक निर्मल आनन्द की प्राप्ति है—

अतिराम्भीं भूल्या तदमलमलाननसंवदोहेहैं
पश्यामि ब्रह्मजिह्मोतसुद्वस्थ्यस्वाद्वस्यमंवलल॥

योग साधना से चित्त में शांति और स्थिरता की प्राप्ति होती है और बिमल ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है जिसको समाधि दशा भी करती है—

योगीस्यतोनिरोधे परिचित परम ब्रह्मकर्मं तथे
तत्त्वायपावा कियतो यमनित्यमुखान्यांिते वर्णमीयोऽि
येशायम्यासयोऽऽ समुदययिं समाचेतसः स्वातिकर्तव्यं
साक्षात्कारः समाधी प्रभवति किमलब्रह्मणोद्वैतसिद्धै॥

आसन सिद्ध हो जाने पर श्रम, आलस्य, काम—व्यथा आदि विविध मानसिक विकारों का उपश्रम होता है चित्त में स्थिरता आती है और वह स्वस्थ होता है—

सिद्धानामासनानि श्रममदन्तन व्याधिवादोद्धरणे
यानि ख्यातानि तेषामपि च परिवर्यः सेवनीयः प्रयत्नात।

अभ्यासेना सनानां प्रतिदिनसमः आलस्यमौत्सुक्यमन्त्र

जित्वा निद्रा च योगी गुरुचरणज्ञानविवेकत्वम् परस्परस्थितः।

ध्यान की सिद्धि होने पर मनुष्य का भूख आदि का अनुभव नहीं होता और वह सभी इन्द्रियों को बलात्वशा में कर लेता है—

ध्यानासक्तः रिखिः प्रयः किय दशनकृता हारतोषस्तपस्वी

जित्वा सर्वेद्विषयाणि प्रसभुमुगगा खेलवरतं प्रसिद्धः।

धारणा सिद्ध हो जाने पर चित्त के सभी दोष निवृत्ति हो जाते है तथा सत्योऽस्ति कुपित्ति होती है—

सिद्धिर्वाचारणी वा स्फुरति च परितो जातसंस्करणोपेक्षा

निदोषः पूर्‌कृत: स्वयंतिनियततत्वा धारणा कर्मणीह।

योग सिद्धि हो जाने पर अहंकार क्रोधार्यः दोषों के निवृत्ति हो जाने से चित्त में सत्त्व जन्म सज्जेगृह आती है—

नौतितस: स्वाज्जजस्य मरणायमि भवेदुर्दृङ्गस्मान्नाराणाम

नाहवकारो न रोकः सकलजनगतिः सत्यसंस्कृतवित्ति:।

और इस प्रकार परमानन्द की सिद्धि हो जाने पर स्वभाव: संसार के सभी विषयों के प्रति उपेक्षा भाव हो जाता है—

कर्मण्यध्यात्मसंज्ञे समुदितविषयावज्जया चित्तपृक्तः।

कृत्वा साक्षादशे ध्येयो लघुतो लीमानं तदन्ता

योगी संसारसारं फलमनुभवति प्राप्तभ्रमौक्मृपः।

कविने यह भी स्पष्ट किया है कि अव्यक्त प्रकृति ने ही सबको उत्पन्न किया है और वही सबका नियन्त्रण करती है—

अव्यक्तं नाम किचिदप्रकृतितिरिति महाखायतीवसाच्य तत्समा

ज्ञाताधृत्वं कर्मणाम भूमित्वमहादहकारात: प्रजव तत्ततः।

तेस्यः पञ्चनिंद्रभणिः निमुगुणग्रलव प्राप्तत्त्वद्वद्वहाणि

प्रायसतीतेऽव भुः लक्ष्मनिन्द्वयस्य पूर्णः कर्मवेदः।
कवि ने यह भी उलेख किया है कि प्रकृति के अनुसार ही मनुष्य को अगला शरीर प्राप्त होता है—

प्राप्तो बन्धाय हेतुमर्मस्वयवविभोऽ: कर्मवेश्तवाणुष्टुऽगो
दृष्टान्तो योम सिद्धं विशालिक्ष कथमिदं गर्भमन्धान्यधकारसः।
व्यापारेनापि सिद्धः परम्परापि तात्त्वावधानानुरोधोऽजीवास्ये चापराधाप्रकृतिधिः भवेत्यकायसः सहायः।।२६२

(III) प्राकृतिक उपादानों का अप्रस्तुत विधान—

इस शतक काव्य में विविध प्राकृतिक उपादानों का अप्रस्तुत विधान भी उपलब्ध है जिनमें क्षार, समुद्र, अभिं जी ज्वाला, नदी, प्रकाश, बादल, अंधकार आदि प्रमुख है। एक स्थान पर दावानल, सुमेरु पर्वत, धुआ, मेघ और वर्षा इन सबका अप्रस्तुत रूप में विधान हुआ है—

शीतल शीतल दिव्योऽ: कलिदवदंहनानाहिभ्यतः पुर्णमेऽरो
रत्न: संतो विशालिक्ष धुरमिह जगती जनम धूमोपतापः।
तत्कि नारायणस्वत्र त्रिपुरारिणपुर्वं मेघघ एष
ज्ञानापासरसोकावच्छमयति सपन्दे ज्वाल जालं क्षणेः।।२६३

इसी भाषा एक स्थान पर सूर्य चन्द्रमा और अंधकार का अप्रस्तुत रूप में विधान देखिए—

यज्ञज्वालासस्मस्ताच्छतमखपद्वीय याज्ञिकाद्वयस्तोऽदमी
सिद्धे साध्ये कथशिविदपरिपुरुषवतां चन्द्रमा चेतामोहः।।२६४

निम्नाकित श्लोक में वन खरगोश सूकर महिष नाग और सिंह का अप्रस्तुत रूप में विधान द्रष्टव्य है—

बङ्क्रा रूढ़ा विरूढ़ा जनशाशिशिवमः खण्डिताः पुंवराखा
दर्पण्या: स्तम्भादेव नरपतिमहिषा लक्षितावीक्षणेन
विद्वत्वाणुतागात्यांतिः पधि निहता जानसिद्धाऽपि सिंहः
कल्याणे नीत स्वयंमिति जगत्कानेन कर्मदाये।।२६५

एक स्थान पर अभिं, ज्वाला, तेल, कंढाई जाल पक्ष का भी अप्रस्तुत अवलोकनीय है—

शोकाभिन्नव्यालीष्टे बहुविधेविषयस्मेहपूः गमीरे
संसारेऽस्मिन्कटाहे जनवनशकुनीमोहजालेन बढ़िन।
भज्ज भज्ज यदसनन्ति कदायति मुखः चन्द्रसूर्यचलान्ति
दृश्यते कालद्रंगेः सदुद्वरिकरं कीकसं तत्प्रतीः।।

इसी महति निम्नान्तित पदार्थों का अप्रस्तुत विधान भी अथोनिनिदिष्ट स्थलों में

द्रव्यम् है—

ज्योति और काला वर्ण
पुष्पय स्त्रिय ज्योतिरीतहिलसति सतियुमण्डले दीपमां्।।
अमन की ज्वाला शोकांग्नि ज्वाललीढे बहुविठविषयस्तेहृषुरूपरंगम्मीे्।।
सोया—ग्राम्यो यस्य याता: कनक परिणाति शालयः शक्कपाकः।।

नदी और मछली—
अस्तं संसारनाभं ध्वं निर्दयोधं जूतान्ति
स्तव्वा सोल्लाधारं परिहर्त परं श्रावलो लोकमीनः।।

सूर्य और प्रकाश—
तीर्थं तीर्थं तपस्या रसनिरसमुना सोऽऽुंसमुयपते
स्तवान्तऽऽतेन तत्तिं कृतां नयतो जायः स्वप्रकाशः।।

ज्योति—
पुष्येष्यन्ते कथाविचित लक्षणविद्वद्धः जातशीतः
प्राप्तः किक्तांसाधि परिचित्तपरम्योतिरसान्दस्तः्।।

नदी—
दर्शयोराददर्श्यान्नयशरणिमुखो विमातः पाृववाणा
रक्षस्याः केघपः सन्त: सपदि तरुणाः पूतपारे विशान्तः।।
क्षोजहन्तुभियुमुरुसि निजे गाढ़माक्ष्य नूँ
मणा संसारनान् न पुनरुदितम्ये जातु दुम्बीभेने्।।

चन्द्र स्थितं अमृत—
तस्या वक्त्रे कथाविद्वदिशति यदि मकुत्विन्योगे विशाशी
तुटा शर्यात्तोधुमी हिमकिरणसुद्मा नान्यियन्ते मुनीन्द्रः।।

घड़ियाल, पर्वत और खारा समुद्र—
कामशक्तिमु्ते रेशु ज्वलनकवलिते मानिता नक्रवक्रे
कान्ता कान्तेश्वराण्ड्रासा सालहरीमनोलोृक्षवै।।
संसार क्षार सिन्धु प्रविष्टाति पुरुषः किं न रत्नावं वेद

317
गोष्ठीं विद्वानानां परिषदि नृपतिर्मीतसत्योपकारः ॥

खारा समुद्र का अप्रस्तुत विधान अन्यत्र भी अनेक स्थानों पर किया गया है ॥

चन्द्रमा और मध्य—

यामिन्यां जागृसके मनसि शशिमुखः प्रथममदेभन मल्ले ॥

जल प्रपात—

चौरिसुरदशीजं नय पवित्र कृत्यो विभ्राममुप्रपातः ॥

अंधकार—

मन्ये वृद्धे कृतां धर्मतिमिरुक्राक्रान्तेऽनेत्रप्रकारः ॥

वानरी—

मुख्तयं शैशार्ये प्रतिविशालिति पुनर्यवनीयोमिलोष्ट

ये जाता भोगहेतोऽनुत्थानसति तत्तो नर्त्ता वानरीव ॥

सर्प—

बोधे यस्यक्रमं सच्चो विषयविषय्यो नैति पार्श्वे कदाचिन्नेव

नैव प्रभावः प्रकटसर्पिं निष्ठ स्तम्भव दुष्कृतां च ॥

आकाश और पक्षी—

आकाशस्येऽह मध्ये खगसद्वशमनुस्तमाकारभावं

भीरुपं वर्तु विवित्तकरमिति मनसा रुपवच्चेतिमत्वा।

किंतुतातीतो न शून्यो वियदित वहनकारमाधारमात्रं

सत्येनासो समाधो रचयति प्ररम्भौतिकाणूपपरेव।
6. मनः शिक्षा शतक में प्रकृति चित्रण

विषय वाच्यपरिवर्तिणिर्ण रंगा सहाय द्वारा प्राणीत मनः शिक्षा शतक नामक
उपदेश परक शतक काव्य में भे प्रायः अन्तः प्रकृति सम्बन्धी विवेचन ही मिलता है
तथापि यत्र तत्र बाह्य प्रकृति के उभय पक्ष का चित्रण एवं प्राकृतिक उपादानों का
अप्रस्तुत विधान भी परिलक्षित होता है इस शतक काव्य में प्रकृति चित्रण निम्नवल्ल
विवेचनीय है।

(1) अन्तः प्रकृति चित्रण—

इस शतक में भि विविध प्रकार के मनुष्यों की प्रकृति और भि—भि
दशाओं में उनके प्रकृति प्रेरित व्यक्ति का वर्णन हुआ है।

निम्नलिखित रिकें में राजाओं के कल्प ग्रस्त चिति एवं उसके परिणाम का
वर्णन हुआ है—

अये मनो भूपतिकोपजातादलमिभ संतापशालादलमिभ।।
कोपं ज्वललतदनेकस्य प्रक्षणस्य हेतोग्रहण निरीक्ष्योकस्म।।

इसी माति सन्ति दुष्ट प्रकृति वाले राजाओं के दर्पण एवं अस्त्यता का चित्रण देखिए—

अये मन: किं नु दुरीशरप्त—दर्पन्कितदशाश्रितये शुद्दीते।।

इसी माति अधोलिखित शलोकां में राजाओं के दुष्ट प्रकृति का वर्णन द्रष्टव्य है—

अये मनो: गातिलतालवाले मुखेविशेषान्न दृष्टांशया।
भूपप्रथां दृष्ट्यतामणीषां किं पाददेसे मृतामणिताशा।।

X

अये मनो: भावितिवि विविय यदाश्रयायायस्रस प्रमादम्।
ते भूमुखः खल्वमपीडः मन्तु क्षणुं न शक्षणति कुलोज्जुमयम्।।

इसी माति दुष्ट राजाओं से प्रजाओं को स्वाभावकः भय होता है—

अये मन: स्वापदित मिलनवत्तः कुट्टकिकेतरिङ्गमुद्रे तुदेयुः।
सत्कारा भारा दिस्यंगिराशीराशील्प्रदिझ्यापसरे निरसी।।

निम्नलिखित शलोक में दुष्टों की प्रकृति बतलाते हुए यह कहा गया है कि
उनके आगे अपनी व्यथा व्यक्त करना व्यर्थ होता है और उन दुष्टों के मनो विनोद का हेतु होता है—

अये मनो दुष्टधियं पुरस्तातः वृथा कृथा हा परिदेवनानि।
कृपयिति ते लाभि यतं स्वयंत्रो विनोदेति हस्य देवनामि।

ये दुष्ट कृष्ण भी यात्रिना करने पर तत्काल उग्र हो जाते हैं

अर्थे मनो यात्रिवाचित्वकृतियि प्रकृत्यनिति भूतायोऽसा।

ये अत्यन्त ईश्यानुप्रकृति के होते हैं किसी उन्मति की अथवा वैमय नहीं देख सकते—

अर्थे मनो ये प्रभुतामित्तभावन्न सहय पुरुष वदरितलिस्तते।

ये सदेव अपनी वाणी द्वारा निर्मल निरीक्ष मनुष्यों को अमानित करते रहते हैं—

अर्थे मनो राजसदस्यदस्यस्ते गिरा खलस्यापि परमभोय।

अर्थे मनो दक्षिणानुप्रकृति व्यथाय दुर्भाग्यनांमिति।

ये अत्यन्त असंवेदनशील प्रकृति के होते हैं किसी भी प्राणी के कष्ठ से प्रभावित नहीं होते हैं—

अर्थे मनो शिक्षायता भृत्तिवा वने जनोंने रुकित मया किम्।

किं वा स्वहासाय पुरुष खलानां शैलूषकर्मणुकृतं जडेना।

दूसरी ओर भिन्नांकित स्थल पर सज्जनों के कोमल चित्त का चित्रण करते हुए कवि कहता है—

गंगा सहायेन मनस्चल्लेन नीता प्रकाशानिनु दुर्भाग्यम।

गृद्धिः नित्यं खलु सज्जनानां करोऽरुं चेतांसि दयाकुलानि।

एक स्थान पर मनुष्य में सामान्यतः विद्यमान राग द्वेष आदि का उल्लेख किया गया है—

अर्थे मनो शानुपुष्क्तसमेत विद्वेषजनानी उभयादिकेति।

दूसरी ओर भिन्नांकित श्लोक में राग एवं वैसाधय से युक्त पुरुषों की प्रकृति का एक साथ वर्णन किया गया है—

अर्थे मनो रागवशादिन्त्यं प्रश्ये लोको वृत्तिनानि यति।

निरागस्ते तु विद्यमानिन त्रपूत्रयें कोलिपि विभुविभूतात।

एक स्थान पर चोरों की प्रकृति और उनके प्रति मनुष्यों का द्वेष भाव एक साथ वर्णित है—
भयो मनसे धनहारकाः सयुः परापराधेकपरा जनाश्रेष्ठः
न तत्र योग्यतवाव कोषिपो रोषस्वाधीपि यद्वित निधानदोषः।

इसी प्रकार मत्सर से ग्रस्त मनुष्योऽ का चित्रण देखिए—

अये मनो मत्सरतारतारशेषणदर्श मन्त्रास्तव निन्दनेन।

इस प्रकार के कुटिल बुद्धि वाले मनुष्योऽ का संग करने वालों के प्रति
कल्याण कामी गुरुजनोऽ के चित्त में भी रोष उत्पन्न होता है—

अये मनो दुर्जन संग दोषाधिपपुर्यं चेद गुरुजोभिप्पिः याताः।

इसी प्रकार निचले श्लोक में राजाओऽ की चादुकारिता करने वाले मनुष्योऽ का
वर्णन द्रष्टव्य है—

अये मनस्तुलिमहीपतिनाम समस्तीनां मुरलो शतन।
धारामिताश्च प्रभावपूर्वः किं चादुकारितिं विवारः।

निम्नान्तित श्लोक में धने के प्रति लोभग्रस्त मनुष्योऽ के चित्त का वर्णन द्रष्टव्य है—

अये मनो कांवनवचनायोऽ दधासि यत्कावचन हा दूरीहान।

प्रृथितमेकाः च न यसि मोहादक्षेपु तत्कावचन योग्यताते।

एक प्रमाद युक्त मनुष्य अपने लक्ष्य से भटक कर किस प्रकार पतन को प्राप्त
होता है इसका वर्णन देखिए—

अये मनो श्रीगुरुसनिधिनां दलनेन रत्नमण्डवपापिताः।

सापि प्रमादेन महाधेाकूपे वृथा निष्क्षोऽ कुशिशायरूपे।

निम्नान्ति श्लोक में अज्ञानी मनुष्योऽ के मोहग्रस्त चित्त का वर्णन है—

अये मनो नियतनवीन वीणा दुःखानिमुखे क्षणमात्र दीना।

सुकर्म हीना निश्चयः दीनान वृत्ति: किमाधावरीत तावकरीना।

मोहग्रस्त मनुष्योऽ की प्रकृति प्राय: विषय परायण होती है—वस्तुतः 5 इन्द्रियोऽ में
से किसी एक इन्द्रिय के असंयत होने पर मनुष्य असंयत माना जाता है—

अये मनो केनचिंदिन्दिनिर्ययः क्रांतमवर्ज्यानु पुरुसरवर्ज्याम।

बिलोकसे सांप्रतिकतलसे दृष्ट्र्वय ह्यावीकानि यतसर्ज्येतुम।

मनुष्य के लिये कठुवाणी प्रायश: असत्तत्ती होती है इस विषय में कथित तहता है—

उपेक्षानवैव संह परेषां कठीर्गिरः सम्प्रति भंशतीयाः।

X X X X

अये मन: पूर्वम पूर्वं रोषदोषेण देश्याय बहुः शुक्लमुक्तम्।
युक्त तवाहना विहाय मां सत्यादिमूले शिरस: प्रदानम्। ¹³⁸

इसमें भी अपने ही बन्धुजनों द्वारा प्रयुक्त कदुनाथी मनुष्यों के लिए सर्वाधिक असहनीय होती है जैसा कि नीचे स्पष्ट किया गया है—

अये मनो गेहजनोकित खेदे: प्रतप्तते चेदिह भूरिमेदे। ¹³⁹

पाप कर्मों के फलवरूप प्राप्त होने वाले सांसारिक कष्ट सभी मनुष्यों के लिए असहनीय होता है कवि कहता है कि—

अये मन: पापजलापएल्जवला धर्मपुस्पिवि जाज्यकिति। ¹³¹⁰

संसार में सभी मनुष्य प्रायः स्वार्थी प्रकृति के होते है संगे बन्धुबाध्य भी स्वभाव से स्वार्थी होते है इसे भगवत दर्शाया गया है—

अये मनो बन्धुजनानासाहुन्-नवितारंतव तापतोऽपि। ¹³¹¹

जात्वाय यत्तत्र तवानुसंगतस्तदापि वापणिदानभागः।

अये मन: स्वार्थ गृहत्वम् मे श्वसः कृते यावनतो जहासि।

हा सिद्धकामा ननु बन्धवस्ते शरस मनस्तेन समर्थयति। ¹³²

यह भी स्पष्ट किया गया है कि स्वार्थ के वशीमूत होकर प्रायः मित्र अमित्रवत हो जाते है तथा सहोदर भाई भी पीढ़ा पहुँचाते है और पत्नी भी कुवचन बोलने लगती है—

अये मनो मित्रमित्रतुल्यं सहोदरस्ततादुसमोदयम्।

दारा: कुवचा कृतत्त्विविदारा: पाराय दुःखस्य कौधपुपायः। ¹³³

किसी भी मनुष्य के अन्तिम समय में उसके सभी बन्धु बाध्य मोह वश ही पीढ़ा का अनुभव करते है तथा अपने स्वार्थ हानि के विषय में सोचकर दुःखित होते है—

अये मनो हा नियते नियोगात्माणाविकर्षतु यमानुगेषु।

बन्धुपालेशु रुद्धतु चतुर्मुद्ध्यातुमविता सुखय। ¹³⁴

सामान्य मनुष्य धनान्नी से संयुक्त हो जाने से प्रायः इतना असंवेदनशील हो जाता है किसी की व्यथा उसे स्पर्श नहीं करती—

अये मन: कोपि न ते व्रीति स्ववेदनामत्र निनवेदेयति। ¹³⁵

अये मनो उसहरुणेवपि महं दुःख्यति लोकां इति मास्मशे:। ¹³⁶
निन्माकित श्लोक में धनवानों की असवेदनशील प्रकृति के विषय में बताया गया है जो पीड़ित व्यक्तियों को कठु वाक्य द्वारा और भी अधिक पीड़ित करते हैं—
अर्थं मनः स्वापिि वितक्तवतः कटुकितकीटिमुदे तुदेयः।३१७
ये धनवान पुरुष याचना करने पर गर्व के परवश होकर प्रायः निषेधकारक एवं तिरस्कार वाक्यों का प्रयोग करते हैं—
अर्थं मनों ये तव याचनोक्ती नकारधिककारमुदाहरसति।३१८
अन्ततः कवि यह भी सप्तत करता है कि मनुष्य चाहे जिस प्रकृति का हो यदि वह भगवान की शरण ले तो वह निश्चित रूप से शान्त व सुखी हो जाता है—
अर्थं मनः सन्तत्रणे भवायेमां याहि नन्दातसकातरतम।
सुखेन लया हरिधर्मनांव संश्क्ष्यत्य यातासि विशोकभावम्।३१९

(II) बाह्य प्रकृति चित्रण—
इस शालक काव्य में एकाप स्थलो पर बाह्य प्रकृति का विविध रूपों में उल्लेख हुआ है—
एक स्थान पर देव नदी गंगा का उल्लेख करते हुए कवि अपने मन को समझाता है—
गंगामनंगारिष्णो विमृश्यां प्रयाहि नो यत्र लवोक्ष्यमृशाम।३२०
इसी भावि निन्माकित श्लोक में गंगा के तरंगों में सानन्द विहार करने का वर्णन भी देखिये—
अर्थं मनों गांगतरंगरंगे नृत्यन्मुहस्तायित वास्तसङ्गे।
मुदा हरेद्रासिदुहारेत गोकिन्ददामोदरमाधातेिति।३२१
एक स्थान पर चन्द्रमा के मृणाल होने का वर्णन द्रष्टव्य है—
अर्थं मनस्यवस्यदेवरित्सत्य पाद्राहादापविकाश ए।
जः शाशि नित्यमननित्यभासादसादादिताम्यति पस्यसीमम्।३२२

(III) प्राकृतिक उपादानों का अप्रस्तुत विघान—
मनः शिश्वाशे शाख के विविध प्राकृतिक उपादानों का अप्रस्तुत रूप में विघान दर्शनीय है यह अप्रस्तुत विघान निम्नवत् देखा जा सकता है—
चन्द्रमा—
श्री देवकीनन्दन! मन्दहासप्राकाशदासाभीकृताभावम्।३२३
अंधकार और चांदनी—

323
अये मनो दुरस्तमसा निरस्त नालोकसे चेदिव किंचनापि।
सुखपनासुन्दरवर्णिकाभिरे हरेर्या-नखचन्दनीकाभि।।

कमल और पराग—
भवेद  भवे धीर्यद्विते मरागा तदा सखे रया  विधुतपराग।
गुर्दं,धपाधोजनुष: परागानानाध्य मा तात  भिष-परागा।।

X  X  X
विन्दविन्दकाशपादाविन्दासमन्द  मुद्यान मकरन्दीनमृ॥

भ्रमर—
अये मनोरूप हरेर्दयातो हिंता गिरश्वेषहितिामादीया।।

कमल—
अये  मनः कर्मभिर्दिवमाना मा  नाम  भूदरमुरुहालमाने।।

X  X  X
जातेवन्दकाशपादाविन्दासमथां ......  भिमुखं  सुखं  कव।।

X  X  X
स  श्रयसे  श्रीपतिपादपदमसदमल्लमवाहह  किं  ननीत:।।

बादल—
घनावदातददुतिशालिमायानाथं सनाथीकृत्वेदगाथम्।।

अग्नि—
अये मनः  पापगणेन होत्रा  विधिप्रयुक्तेष्टयुपपसितेहो:।
हुकामनिसंदीपविपत्तिकृष्णं लचा  सुचाहा  विहवि:  सुखन्ते।।

अग्नि और बादल—
अये मनः  पापजतापजालज्वालाधरश्वेतचयं  जाज्वललीलि।
कमयनाथाय  सुखार्पितारं  धाराकरं  धारय  धारयार्म्।।

कुप—
सापि प्रमादेन महानुकृष्णेव वृथा निर्खेपि  कृष्णिष्णुपेः।।

समुद्र—
अये मनः  सन्तरणे  भवायोमां  याहि  नष्टातरकातरस्त्रम्।।
7. अन्य प्रमुख वैराग्यपरक शतक काव्यों में प्रकृति चित्रण

उपर्युक्त शतक काव्यों के अतिरिक्त पदमानन्द कवि वैराग्यपरक गोस्वामी जनार्दन भट्ट द्वारा विचित्र वैराग्य शतक आदि वैराग्यपरक शतक काव्यों भी प्रकृति समक्षी चित्रण अनेक स्थानों पर दृष्टिगोचर होता है। जैन कवि श्री पदमानन्द विचित्र वैराग्य शतक के अन्तर्गत निम्नाकांक्ष श्लोक में पर्वत और वृक्षों का अप्रस्तुत रूप में विचार किया गया है—

य: क्षरुणा: प्रसर्दिवेकप्तिवा कोपादि भूमीभूतो।
योगाम्यासपरश्वेन मधितो येरोन्हादात्रीरुहः।।

इसी भांति आधोबती श्लोक में तत्तम पत्र और चन्द्रमा का विचार अप्रस्तुत रूप में लक्षित होता है—

अन्यायार्जित वित्त वत्कचिदपि भ्रष्टं समस्तेद्दे।
स्तापक्रान्ततमालप्रज्वल भूद्रुंग वलीमङ्गुरम।।
केशोऽुक्षणचन्द्र वद्वलिमा व्यक्तं श्रीतो यदापि।
रूपं धावति मं तथापि हुदर्य भोगेषु मुखं हहा।।

एक स्थान पर भजनी के व्याख्या से कमल के रोमांचित होने का उल्लेख किया गया है—

यत्राब्जोऽपि विचित्रमञ्जरिमव्याज्जेन रोमांचितो।

निम्नाकंकित श्लोक में एक विवेकशील पुरुष के मनस्ताप को भ्रमणजना की गयी है जिसने प्रभाव वश समस्त अर्जित शक्तियों का दुरूपयोग किया है—

कष्टोपार्जितमत्र वित्तमथिलं घृते मया योजितं
विचार कष्टं गुरुरविगता व्यापारिता कुस्तुतो।
पारम्पर्यसमागतं च विनयो वागेश्वरोऽकृतः
सत्यत्रेष्मा किमं करोमि विवशः कालेड्रा नदीयथसं।।

भक्ति होने की स्थिति में संसार का कोई भी पदार्थ सुखद नहीं हो सकता इसे अधोलिखित श्लोक में बतलाया गया है—

आनन्दय न कस्य मन्मथकथा कस्य प्रिया न प्रिया।
लक्ष्मी: कस्य न वल्लभा मनसि नो कस्मादृगज: कृडित।
तामूलं न सुखाय कस्य न मतं कस्यानांशीतो दरकः
सर्वाशा दुमकर्तमेक परशुमयुर्वेचेत्स्याज्ञनोः।

इस श्लोक में वृक्षों का अप्रस्तुत रूप में भी विधान द्रष्ट्व्य है।

निम्नाकिंक श्लोक में भी एक विवेकी पुरुष का पश्चाताप वर्णित है जिसने
मोह वैश जीवन का सदुचयोग नहीं किया—
कंदर्प्प्रसर प्रशान्ति विध्ये शीलं न संशोधितं
लोमोमूलन हेतुवे रक्षिवने दत्तो न पाते मुदा।
व्यामोहोन्मथनाय सदुरुगीरं तत्वं न चाक्षुःकृतं
दुस्यापो नृष्यनो मया हतिधिया हा हारसिद हारित।

निम्नाकिंक श्लोक में पर्वत का पादमूल, गर्त्, लता का मूल भाग, नदी व्याघ्र,
हरिण और भयानक वन का अप्रस्तुत पदश्चर के रूप में विधान किया गया है—
अज्ञानांशिते कवचचितविधिपि प्रयुम्नगतान्तरे
मायापुरेते कवचचितविद्वहो निन्दानदीसंकटे।
मोहव्याघ्रमयातुरं हरिण वत्ससाधोरातवी
मध्ये धावति पश्च सल्लसरं कष्टं यदीयं मनः।

एक स्थान पर सुधारसं, हलाहल विष, कल्प वृक्ष, दायानल का अप्रस्तुत रूप में
विधान द्रष्ट्व्य है—
कारुण्यानन सुधारसोशित ऐतिहय ब्रोहान समालं
वृट्तदिति न कल्पपादाप इह क्रोधानः दायानलः।
संतोषदयोशिति न प्रक्षुह्न्योमान चान्योशिपु
न्युक्तायुक्तं मया निम्नदिति यज्रोवते तत्त्वज।

निम्नाकिंक श्लोक में सिद्ध योगीश्वर की अविचल अक्षोभणीय प्रकृति का
वर्णन किया गया है—
तन्या श्रोतरस्सा यन्नन वचसा सप्रेम संभाषितः
सर्पत्नापिपासकपादलरुच्या संवेशिततावक्षुषा।
सधोगानन तिलाप्रमाणमपि य: संक्षोभमुं शक्यते
रागद्विषविधितो विजयते कोष्ठेष योगीश्वरः।
एक स्थान पर नदी, तरंग, लता और पल्लव का अप्रस्तुत रूप में वर्णन किया गया है—

तृणावसितरूः गमभए विलस्त्वतित्रित्वल्लीरूह
सिर्यक्षिप्तवाक्यप्रर्पचकवर्मवर्षपश्चुः: पल्लवा:।

अथोपव्य रिलोक में हंस और बक कोकिल और काक तथा स्वर्ण और हरिद्रा का अप्रस्तुत रूप में विवाह करते हुए सज्जन और दुःख की प्रकृति में अन्तर बतलाया गया है—

शैक्षेय हंसबकोटयोः सति समें यद्वदन्तावतांतरं
काष्ठ्यों कोकिल काकयों: किल यथा भेदो भृशं भाषिते।
प्रेये हेमहरि द्रव्योपि यथा मूले विभिन्नार्थता
मानुषे सदृशो तथायर्यखलयोद्वारं विभेदो गुणे:।

दूसरी ओर गोस्वामी जनादान भट्ट प्रणीत वैराग्य शतक में भी प्रकृति का
विशिष्ट रूप विनियत दिखाई देता है।

निम्नाक्षरित रिलोक में कलिन्दी कूल पर विद्यमान कानन में सानन्द गोपाल
वल्लभ के साथ वंशी बजाते हुए कृष्ण भगवान का समर्पण किया गया है—

कलिन्दीकालकूलकाननकृष्णकोलालपल्लसद
गोपालबालकं प्रतिदिनं सानन्दमाविष्टितम्।
वंशीनादविशीकृतवजरहूद्रावान्तं सदाहलादकं
सदभक्ष्या समुपास्महे वयमधवसाके धीरं मह:।

निम्नाक्षरित रिलोक में ललिता समुद्र और मेघ का अप्रस्तुत विवाह किया गया है—

मोहं मुख तुगीहि लोमलकिको काम च वाम त्यज
प्रेमा बन्धमपाकृतु प्रवितं प्रीठासु नारीषु च।
संसारविवाहमं भक्तिनिवृत्ताभास्त्रं सादरं
देवं नृत्यमतिरिहार्षिं येतं: समारस्यं।

एक स्थान पर योगीशवर पुरुष की दयामयी स्नेहमयी और सत्यभाषिणी भक्ति
प्रधान प्रकृति का वर्णन किया गया है—

य: सर्वत्र दयामयी भवति य: सर्वत्र वै सत्यवा
र्य: सर्वत्र कृत्वा कश्ची भवति य: सर्वत्र स स्नेहदृष्टः।
य: सर्वत्र सुरासुराविष्टपद्मनाभासाजानमिकाः

327
नित्यं संस्मरति क्षिती स विवृद्धेयंगीवरः कथयते॥ ३४९

निम्नाकित श्लोक में भिन्न-भिन्न प्रकृति के मनुष्यों का वर्णन किया गया है—
कक्षिकरागमं भजतात्सर्वण्हस्यं दुर्गृहस्तकलोत्सु
त्यो विद्व विद्याविनोदे सुलिलित कवितापद्धारे चापी केंद्रित।
कक्षिकरोर्त्राविज्ञानवजनवसनसर्वण्हस्यं न्यायादि वेशं
हित्रा: कृष्णादि:प्रयद्यंप्रचरुर धुर्षीपाय भाजो भवन्ति॥ ३५०

मानव की सभी आवश्यकताएँ प्रकृति अपने संसाधनों से अर्केले पूर्ण करने में समर्थ
है इस समय में, वृक्ष, निशार, नद, पुष्कर आदि के उल्लेख से युक्त निम्नाकित
श्लोक द्वारा हैं—

किं वृक्ष विफला: सम्व समवन्विन्त कन्दसीना धरा
निर्मूलानि वनानि तानि किमहो जातानि सार्वाण्यपि।
लघ्यस्वतं किमु न लघवं: क्षतिरूहां लोको न वस्त्रप्रियो
यल्लक्ष्मीमं दिरोक्कटानरस्तीय आत्मामानोत्तेयो।॥ ३५१

_ _ _ _ _

पक्षाविनि वस्ति विपिनेषु फलानि तानि
शीतानि निर्जनर्दादिषु पुष्कराणि।
जैत्ये भृशं जड़तः स तु य: प्रभूपाँ
सेवां करोति हि धनार्थनेनकर्वेद्ये।॥ ३५२

एक स्थान पर वन में प्रकृति के गोद में रहते हुए लपसियों का वर्णन करते
हुए निर्जन वन फसल भूमि तृण निर्मित आसन वृक्षों से प्राप्त वल्कल आदि का
उल्लेख किया गया है—

येदवर्ये विज्ञे वस्ति सततं सस्यानि ये भुजिते
ये नित्यं भूवि शोरते तृणमयं चासीर्य रस्यासनम।
ये ये विशृंगि वल्कलानि विभारं पश्यनि ये जातु नो
तानास्ये तपोधानानिकलत्योत्भुवे: प्रसूनायुधु॥ ३५३

धन्व वैमव वामण्यात्या सभी मनुष्यों की बुद्धि मलिन कर देता है इस समय
में निम्नाकित श्लोक द्वारा है—

धते मौनमनवर्यं किल पिता लुब्धो यद्यथं पुनः
माता स्नेहस्य विमुञ्जति कलिं भ्राता करोतिस्विद्धयो।
सर्वथा बन्धुजना यदर्थमशुमं वाच्यनित नानाविभिः
भाष्ट्रै गच्छयु वहिन भारकलिते दुःखालयं तदसु॥
निम्नाकित स्थल पर सम्पूर्ण उपवन, गृह, सरोवर, कृप, वापी आदि से सुक्त
ग्रामों का वर्णन किया गया है—
ग्राममाश्वतेतिर्योपवनघृसरः कृप वाप्यादिमुक्तः ॥
इसी भाषा स्थान पर मृगनेव का अप्रस्तुत विवाह किया गया है—
अर्थः शस्त्राणि नागास्तरुणमृगदृशो वक्त लोको यदेव।
एक स्थान पर समुद्र का अप्रस्तुत रूप में वर्णन हुआ है—
पारं गन्तं विशवसिन्धोविदम्भ सोगाय्याः साधुबुद्धिः विवधम।
अधोवती श्लोक में चन्द्रमा, सूर्य, पवन, पृथ्वी, चट्टान, पर्यंत, जल और
अर्धन का वर्णन करते हुए प्रलयान्ति में इन सबके भर्म होने का वर्णन किया गया
है—
शिशिरकिरणो मानुषयुगमी गिरयो नगः,
सतिलमनलं यव्यायस्वराकरसः स्मिति थः।
तदर्भिषिकिरं भर्मायुर्युगमप्रत्येकसः तव व वदुः।
एक स्थान पर गंगा नदी का किनारा बृक्षों से प्राप्त वलकण और वन में
उत्पन्न होने वाले कन्दमूल का वर्णन किया गया है—
निम्मूलं सकलं जगजजडलं जानीहि कृतं कलं,
गड़व्या भज वलक्कं कृतितैहो दिव्यं दुकृतं कुरु।
मूलं कान्यजज व भुजक्ष्व मधुरं संसारमूलं मुगः
देवं मीरद नील विग्रहर्ष धरं नित्यं समाराधय॥
इस श्लोक में नील मेघ का अप्रस्तुत रूप में विवाह भी किया गया है।
जल्लण कवि कृत मुगोपदेश (12वीं शती) नामक शान्तक काव्य में गणिकाजन की प्रेम
रहित नितातं कठोर प्रकृति का निम्नाकित श्लोक में वर्णन करते हैं—
शैल्यं कल्यं कंज्जालं कमिकुलेवाचारयावाचारलं
कोदण्डे जनयार्जं विजयमाचार ग्रामं गणेमार्डवम॥
निम्बे साध्य माध्वी सुरमितामादी रसोने कुरु
प्रेमाणं गणिकागणणं चतुरं पश्चातं सखे द्रष्ट्यसि।
शंकराचार्य प्रणीत प्रबोध सुधाकर में परिभाषा श्री कृष्ण भवानन के तर्कमूल में शायन करने का वर्णन किया गया है—

शोधे स परिभाषास्तरमूले कमबले गत: शिशुताम्।।

इसी काव्य में मौं के शिशु अपने शिशु के प्रति स्त्रेववश अन्य जनों के प्रति शंकालु प्रकृति का वर्णन किया गया है—

यथेतु तु नामोच्वारातु कालोऽधिः हि बाधतेन भक्तानान्।।

जनसुगमीत्या जननी तत्स्त्य कपोले ह्यदान्यमीतिलकः।।36।

कवि शिल्हाण विरचित शान्ति शतक (12 वी शती) में सांसारिक विषयों में आसक्त अज्ञानी जनों की प्रकृति निम्नाकित श्लोकांश में वर्णित है—

दधति तावद्मी विषयाः सुखं स्फुरितं यावदियं हृदिमृद्वता।।36।

नीलकंठ दीक्षित ह्वरा विरचित कलिबिर्द्वन (17 वी शती) नामक वेदार्थपरक शतक काव्य ‘कलिबिर्द्वन’ में धूर्त सांयासियों की प्रकृति निम्नाकत वर्णित है—

सदा जपपदो हस्ते मध्ये महंधेश्चिमीलनम्।

सर्व ब्रह्मोति वाद्वच सद्य प्रत्येकसः ।।36।
विश्लेषण एवं समीक्षा

पूर्व कृति विवेचन को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करते हुए यह कहा जा सकता है कि वैदिक शतक (भर्तहरि) में बाह्य प्रकृति के उभय पक्षों का चित्रण हुआ है जिसमें कृप्य शरीर के अन्तर्गत बादल, चंद्रमा, शुभ्र चौंदनी, कमल नाल, गंगा-तट एवं गंगा प्रवाह, हिरण, पर्वत और गुफा, झरना, वृक्ष, छाल, लताएं और सरस फल, पर्वतशिला वायु, कोयला का कलर्व आदि का और कठोर पक्ष के अन्तर्गत भूतल का उल्लेखन, धातुओं का भस्मीकरण, समुद्र निरतरण, शमशान में रात्रि वायुपक्ष के साथ-साथ ऊबड़-खाबड़ प्रदेश, सूर्य का उदय अस्त होना, सर्प गहन वन, प्रस्तर युक्त हिमालय की घाटी, अधोगामिनी गंगा, पर्वत गुफा का पावण मृदा, काल की यास लीला, अभिन ने आहत मकर पर्वत का पतन, समुद्र का गुह्ना आदि का वर्णन हुआ है जबकि अन्तः प्रकृति के अन्तर्गत भोग और योग से रहित पुरुष के वित्त की अवस्था, तुषा ग्रस्त वृद्ध मनुष्य की दयनीय दशा, कामुक पुरुषों की शोचनीय मनः स्थिति, भोग लोपुप स्नायुमन्त्र मनुष्यों की प्रकृति, गर्भान्तर्ज राजाओं का मनोभाव तथा वैदिक सम्पन्न विवेकशील पुरुष की स्वस्थ स्थिति का वर्णन हुआ है इसी भाँति कमल पत्र स्थित जल विद्युत में स्थित विद्युत, वायु, तरंग, बादल, लता, वृक्ष, कमल, पर्वत, चांदनी, वृक्ष विशंस मंबर, मकर, सर्प आदि प्राकृतिक उपादानों का अप्रस्तुत रूप में विश्वास भी हुआ है।

दूसरी ओर शृंगार वैदिकतरंगिनी के अन्तर्गत बाह्य प्रकृति का अभाव दृष्टिगोचर होता है। अन्तः प्रकृति के अन्तर्गत दुःख निवृत्ति एवं भय मुक्ति से सम्बन्धित मानव मात्र की प्रकृति स्त्री दर्शन से पुरुष में विकार की उत्पत्ति, कामोपमोग से पुरुष का संयम विनाश, काम के विषय में बुद्धिमान पुरुष की वृद्धि एवं विषयों से उसकी उदासीनता तथा मूर्ख मनुष्यों की काम विषयक प्रवृत्ति और उनकी राग द्वेषमयी प्रकृति वर्णित हैं इसके अतिरिक्त इसमें कमल, भ्रमर, मृग नेत्र, उदास लता, सरोवर, बादल, चंद्रमा, चंद्रम्मा, हंस, महासर, सर्प श्रेणी, सर्प निर्माण, सर्प विल, दातागिनिय, धूम लहरी, परम्यिक, विष, वृक्ष, वन, समुद्र, अभिन, अंधकार, सूर्य, हाथी, उपलब्धित तुषार पान, गद्द वृक्ष, जल, प्रचण्ड वायु, धूल और कीचड़ अंध कूप एवं रात्रि का अप्रस्तुत रूप में विश्वास किया गया है।
अपव दीक्षित प्रणीत पैराग्य शतक में प्रकृति के सभी अंगों का विचार है।
बाह्य प्रकृति में कोमल पक्ष के अन्तर्गत कमल, बिल्व पत्र, जल आदि तथा कठोर पक्ष के अन्तर्गत आकाश, पर्वत, समुद्र आदि विचित्र हैं। अन्त: प्रकृति के अन्तर्गत राजा और प्रजा की भय युक्त दशा, कामी जनों की अन्तर दशा, संसारसंस्कर्ण मूर्खों की चित्र प्रकृति काम सुख के अभिलाषा युक्त, माता पिता के दोही और दमी मनुष्यों की प्रकृति विषय भोगी गृहस्थ की दयनीय स्थिति, विविध तृणाणों से ग्रस्त मनुष्यों की व्याकुल दशा, कुलमता और परस्पर लम्पट कामियों की मन: स्थिति, भोग और योग के समक्ष में संसार ग्रस्त मनुष्य की दशा मोह ग्रस्त मनुष्यों की स्थिति, गृह त्यागी मुनि जन की लोकलस्थिति प्रभावित मन की स्थिति तथा अन्त: समस्तों संत एवं पारमार्थिक स्थिति को प्राप्त महापुरुषों की प्रकृति का वर्णन का विविधत वर्णन हुआ है। इसी भांति जल, पुष्प, फल, कृष, वृष्टि, धान्य, गंगाजल, मद, घट में स्थित कुश्चा युक्त, दौ चंद्रमा, समुद्र, तालाब, बर्फ और अभिन, तृण और प्रचण्ड वायु, सुधा, सूकरान तथा पवित्र, विद्युत, पवन, महान अंधकार, इत्यादि दल्द और खोजत का अप्रस्तुत रूप में प्रयोग हुआ है।
भामिनी विलास में शान्तविलास के अन्तर्गत भी प्रकृति के सभी रूप विचित्र हैं। बाह्य प्रकृति के कोमल पक्ष के अन्तर्गत यमुना नदी, लंधारी वन प्रदेश, गंगा तट, जलक आदि पंक्षी तथा श्रीकृष्ण द्वारा गोचरण का दृश्य एवं कठोर पक्ष के अन्तर्गत भ्रमर, गुज्जू युक्त मद मतल भादियों के गण्डरथ, सुमेश पर्वत, मलय पर्वत तथा समुद्र वर्गित है। अन्त: प्रकृति के अन्तर्गत दुहों को ईंधनित प्रकृति, विद्वानों में परस्पर स्वाभाविक ईंधन, धार्मिक पुरुष की अन्वेषण धर्म निधा भगवान के उपासक भक्तों की सर्वत्र समर्थित निर्माण आनन्दप्रीती प्रकृति के और नामियों की अंखन्द आनन्द रूपा वृत्ति, विवेकियों की विषय के प्रति विराज मन: स्थिति, भगवान की अतिशय दयालु तथा पतित पवित्र प्रकृति तथा अन्त में एक महाकाव्य और महामणित की गरीबमाती प्रकृति का सर्वस्वादर वर्णन हुआ है। इसी क्रम में सुधा, दावान, चंद्रमा और चकोर, कमल और प्रज्ञनित अभिन, प्रात: कालीन कमल, विद्युत युक्त मेघ समूह लताओं से युक्त तमाल कृष्ण, चांदनी वर्षा कालीन मेघ ग्रीष्म कालीन प्रचण्ड धूप, ग्रीष्म काल का प्रचण्ड सूर्य, तमाल कृष्ण प्रियदुर्गा लता जैसे संयुक्त महरस्थल, रात्रि और अंधकार, कृष्ण, पर्वत, शीतल अमृत सरोवर, मदिरा, यमुना
नदी विजली और लता, पशु, कमल, भमर और पराग, मधु, द्राक्षा और अमृत, इत्यादि का अप्रस्तुत रूप में सुन्दर विघान किया गया है।

वैराग्य धनद शतक में भी इसी भांति प्रकृति के समूह पक्षों का चित्रण उपलब्ध है। जिनमें वाहिन प्रकृति के कोमल पक्ष के अन्तर्गत वन एवं उसमें साधन वृक्षों की शीतल छाया चंद्रमा और तदनुसार कलेज़ आकाश, तारामण और आकाश गंगा तथा कठोर पक्ष के अन्तर्गत सुरमूल पर्वत, त्रीण सागर, सेवनार्जन आदि विष धर सर्व दुर्गम पर्वत विवर में निवास तथा सबके पाप पुण्य के साक्षी सूर्य और चंद्रमा वर्णित है। अन्तः प्रकृति के अन्तर्गत शैलाव आदि भिन-भिन अवस्थाओं में मनुष्य की परिवर्तन शील प्रकृति और मूढ़ दयालु मनुष्यों की प्रकृति के साथ ही सामान्य जनों की भी रूप प्रकृति का भी वर्णन हुआ है इसके अतिरिक्त विरुद्ध, योगी, त्यागी और ज्ञानी पुरुष के साथ ही वैराग्योत्तर दशा में स्थितत तथा शान्ति चित्र दुर्गों के पुरुषों की कृति के साथ ही विवेक शील, गृहस्थ और ब्रह्म ज्ञानी मनुष्य की भी सामान्य मनोदशा का चित्रण हुआ है। इसके अन्तर्गत योग साधना के अन्तर्गत आसन, ध्यान धारणा और समाधि सिद्ध होने पर साधक पुरुष की मन: स्थिति के साथ ही समूह योग सिद्ध होने पर प्राप्त मन: स्थिति का भी निरूपण किया गया है। तदनुसार योगसाधक की सत्य जन सन्तुष्ट सिद्ध योगी की मनोदशा तथा परमात्मा सिद्धि में प्राप्त मन: स्थिति का निरूपण करते हुए अन्त में यह भी स्पष्ट किया गया है कि अयोग्य प्रकृति से समी की उत्पत्ति तथा नियन्त्रण होता है और प्रकृति द्वारा ही अगले शरीर की प्राप्ति होती है। इसके साथ ही प्राकृतिक उपायों के अन्तर्गत दावानल, सुमेत पर्वत, धूम, भेद, वृष्टि, सूर्य, चंद्रमा, अंधकार, वन, खरगोश, सूकर, महिष, अष्ट्र, ज्ञाला, तैल, पक्षी, ज्योति, सोना, नदी, मछली, सूर्य, प्रकाश, चंद्रमा, अमृत, खारा समुद्र, घडियाल, पर्वत मदिरा, जल प्रपात, अंधकार, वाणी, सांप, नाग और सिंह तथा पक्षी और आकाश का अप्रस्तुत रूप में विघान किया गया है।

मन: शिक्षा शतक में प्रायः अन्तः प्रकृति चित्रण एवं अप्रस्तुत विघान उपलब्ध होता है, वाहिन प्रकृति चित्रण नगण्य है। अन्तः प्रकृति के अन्तर्गत कोशी और दुर्ग रजस्वों की प्रकृति और उनका अंधकार सजनों की कोमल प्रकृति, सामान्य मनुष्यों की राग देश आदि समृद्ध प्रकृति तथा वैराग्य युक्त पुरुषों की प्रकृति के अतिरिक्त चोर, मत्स्य, ग्रस्त, चादर, धनोली, मोह ग्रस्त और प्रमादी मनुष्यों की प्रकृति पुरुषों की प्रकृति पर दुष्टों का प्रमाण सामान्य पुरुषों के लिए कटुवाणी, विशेषकर
बन्धुजनों की मान्यता और पाप कर्मजन्य सांसारिक कष्टों को असहनीयता के साथ ही उनकी स्वाधी प्रकृति तथा धनान्ध पुरुष की दशा और उनकी असंवेदनशीलता का विशद वर्णन हुआ है इसी क्रम में बन्धु बान्यों की प्रकृति और अंतिम समय में उनके स्वार्थपूर्ण यवहार का वर्णन करने के पश्चात अत्तें में यह भी बतलाया गया है कि भगवान की शरण लेने पर मनुष्य की प्रकृति में परिवर्तन हो जाता है। प्राकृतिक उपदानों के अन्तर्गत चन्द्रमा, कमल, पराग, ब्रह्म, बादल, और अभिन तथा कृपा और समुद्र का अप्रसृत रूप में विवाह नुआ है कहीं-कहीं बाह्य प्रकृति का विचार भी परिलक्षित होता है यथा देव नदी गंगा, गंगा तरंग, चन्द्रमा आदि।

उपयुक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वैराग्य शताब (भर्तृहरि), वैराग्य शताब (अध्ययनीप्रक्षिपति), भामिनी विलास और वैराग्य धनन्दा शताब में प्रकृति के सम्म पक्ष का विविधता विचारण उपलब्ध होता है जबकि मनः शिक्षा शताब में बाह्य प्रकृति का विचार सूक्ष्म रूप में ही हुआ है। शृंगार वैराग्य शताब पीभी में बाह्य प्रकृति का सर्वथा अभाव दृष्टिगोचर होता है। बाह्य प्रकृति में कोमल पक्ष के अन्तर्गत गंगा तट, गंगा प्रवाह, चन्द्रमा, चांदनी, कमल, लता, बादल, वायु, बिजली की चमक, वृक्ष, तटवर्ती वन प्रदेश आदि का वर्णन प्रायः सभी वैराग्य प्रकर्ष शताब कायाओं में हुआ है। इसके अतिरिक्त झारना, सरस फल, वन एवं उसमें साहित्य वृक्षों के छाया चन्द्रमा स्थित कलक, आकाश गंगा आदि का वर्णन भी अधिकांशत: कायाओं में हुआ है। भर्तृहरि कृत शृंगार शताब में कमलनाल, वृक्ष हिरण, पर्वत, गुफा, वृक्ष छाल कोयल का कलर्ष और श्रृंगार चांदनी का भी वर्णन हुआ है। अध्ययनी प्रकृति वैराग्य शताब में विवरण पत्र गंगा जल आदि का कलिय प्रथमों पर वर्णन हुआ है। भामिनी विलास में यमुना नदी, श्री कृष्ण द्वारा गोचरण, चालक आदि पक्षी वर्णित हुए है। वैराग्य धनन्दा शताब में आकाश, आकाशगंगा, तारामण आदि वर्णित है। गोलार्थी जनार्दन भट्ट कृत वैराग्य शताब में कालिन्दी कूल के तटस्थित वन में गोपाल बालकों के साथ श्रीकृष्ण भगवान का सान्न्द सिखाया नदा पुष्कर फसल, मूर्ति तुषा दिनशिर आसन गृह सरोवर और वन में उत्पन्न कन्दमूल मका का वर्णन हुआ है। इसी दिनकार प्रबोध सुधाकर में भगवान श्रीकृष्ण का तस्मूल में शयन आदि वर्णित है।

कठोर पक्ष के अन्तर्गत सर्प, समुद्र, आकाश, सुप्रेर पर्वत, क्षैर सागर, शेष नाग आदि विचार सर्प, दुर्गम पर्वत, निर्माण आदि का वर्णन अधिकांशत: वैराग्यपरक शताब कायाओं में हुआ है। इनमें भी वैराग्य शताब (भर्तृहरि) में भूतल का खनन
धातुओं का भस्मीकरण समुद्र निर्माण शमशान में रात्रि यापन ऊबड़-खाबड़ प्रदेश सूर्य का उदय अस्त होनो गहन यन को काटना, प्रस्तर मुक्त हिमालय की घाटी, अभिन से आहि मेघे पर्वत का पतन, समुद्र का शोषण, काल की ग्रास लीला, अधोगृद्ध मिमा गंगा, पर्वत गुफा का पापाण मुख आदि वर्णित है। भामिनी विलास में ब्रमर गुजार युक्त हाथियों के गण्डस्तथल मलय पर्वत आदि और वैराग्य धनद शतक में पर्वत विवर में निवास एवं मनुष्यों के पाप पूण्य के साक्षी सूर्य और चन्द्रमा आदि का वर्णन हुआ है।

अन्तः प्रकृति का विज्ञान समस्त शतक काय्यों में हुआ है। इसके अतर्गत कामुक पुरुषों की शोचनीय मनः स्थिति कामोपभोग धारा संयमनाश, स्त्री दर्शन से पुरुष में विकार की उत्पत्ति, गर्भावस्था राजाओं के मनोभाव, विन्दुशेल पुरुषों की स्वस्थ स्थिति, सम्प्रदाय उन्नयों की प्रकृति, महाराज मनुष्यों की मानविक दशा, ज्ञानियों के आनन्दमयी भ्राह्मी स्थिति विवेकियों की विश्वासों के प्रति विरक्त स्थिति, एक ल्यारी पुरुष की प्रकृति, सिद्ध योगीश्रव की अविचल अक्षोभ प्रकृति, योग सिद्धि प्राप्त पुरुष की दयालू, स्नेहमयी, सत्य मयी भक्ति प्रधान प्रकृति का प्रायः सभी शतक काय्यों में वर्णन है। इसके अतिरिक्त भोग और योग से श्रद्धा पुरुष के चित्र की अवस्था, मानव मात्र की दुःख निर्दृष्टि और मय मुक्ति समस्ति प्रकृति, काम के विषय में बुद्धिमान पुरुष की दृष्टिएवं विश्वासों से उसकी उदासीनता, मूर्ख मनुष्यों की काम विषय प्रकृति, मूर्खों की राग दृष्टि मयी प्रकृति, पर स्त्री लम्पट काय्यों की मनः स्थिति भोग और योग के सम्बन्ध में संयम प्रस्तुत मनुष्य की मनः स्थिति, संसारार्कत मनुष्यों की प्रकृति, पारमार्थिक सिद्धि प्राप्त महापुरुषों की उच्च स्थिति उपासक की सर्वत्र समदर्शिनी प्रकृति, दुष्टों की ईर्षालु प्रकृति विद्वानों में परस्पर ईर्षाभाव मानव मात्र की भय के सम्बन्ध में भीरे प्रकृति, योगी और ल्यारी पुरुषों की स्थिति, विरक्त पुरुषों की काम विलास से अप्रभावित स्थिति, योग सिद्धि धारा काम, क्रोध, अंहकार आदि प्रकृतिगत दोषों का निवारण सत्य जन्य सन्तुष्टि, क्रोधी और दुष्ट राजाओं की प्रकृति उनका दर्श और अंहकार, सज्जनों की कोमल प्रकृति सामान्य मनुष्यों की राग दृष्टि आदि समस्ति प्रकृति मोह ग्रास एवं मलागुरु मूर्ख मनुष्यों की प्रकृति, पाप, कर्मज्ञ सांसारिक कर्मों की सभी के लिए असहनीयता सामान्य मनुष्य की स्वास्थ्य प्रकृति बन्धु बाणधि की स्वार्थमयी प्रकृति और समस्ति के अंतिम समय में उसकी उपेक्षा, धन वैचार धारा सामान्य मनुष्य की बुद्धि में मलिनता
की उत्पत्ति, सांसारिक विषयासंक्त अज्ञानियों की प्रकृति आदि का वर्णन भी अधिकांशतः शतक काव्यों में हुआ है। इसके अतिरिक्त भूवाहरि कृति वैषार्य शतक में जहाँ तृणा ग्रस्त वृक्ष की दयानीय दशा भोग, लोलुप दुष्टों के हृदय की स्थिति आदि वर्णित है वहीं अपय मीतिक्त कृति वैषार्य शतक में राजा और प्रजा की भय युक्त दशा, काम सुख के अभिलाषी युवकों और माता पिता के दोषी दमियों की प्रकृति, संसारसंक्त गृहस्थों को दयानीय स्थिति, विविध तृणा ग्रस्त मनुष्य की व्याकुल दशा, गृह त्यागी मुनि जनों की लोकीकृषण सम्बन्धी मनोदशा, कुलटाओं की प्रकृति आदि का वर्णन है। भामिनी विलास में भगवान की समुणास कालक उपासना से भक्तों की आनन्दमय प्रकृति का उत्पन्न होना, भगवद्भक्तों की निर्माण प्रकृति भगवान की अतिशय दयालु और परत पावनी प्रकृति, धार्मिक पुरुष की अविचल धर्म निष्ठा तथा महाकाव्य की गरिमामय प्रकृति का विस्तार पूर्वक वर्णन है। दूसरी ओर वैषार्य धनन्द शतक में शैव आदि अवस्थाओं में मनुष्य की परिवर्तन शील प्रकृति, शान्त चित्त मनुष्य की प्रकृति, आत्म, ध्यान धारणा सिद्ध होने पर प्रकृति में उत्तरोत्तर परिकार, योग सिद्धि में समाधि दशा और परमानन्द सिद्धि में भी मन: स्थिति आदि का वर्णन करते हुए यह भी बतलाया गया है कि अविचल प्रकृति से ही सभी की उत्पत्ति तथा उन पर नियंत्रण होता है और प्रकृति द्वारा ही प्राणी को अगले सरीर की प्राप्ति होती है। मन: शिक्षा शतक में राग एवं वैषार्य युक्त मनुष्य की मिन:—मिना प्रकृति चोरों की प्रकृति, गुरुजानों की प्रकृति पर दुष्टों का प्रभाव, चालक कार धन लोभी और प्रभावी मनुष्य की प्रकृति और दशा कठू वाणी विशेष कर बन्धुजनों की कठौनियां का सर्वथा असहयोग होना मानव प्रकृति पर स्वार्थ का प्रभाव, धार्मिक पुरुषों की दशा और उनकी अस्वयंसेवन शीलता आदि का वर्णन करते हुए यह भी बतलाया गया है कि भगवान की शान्त लेने पर प्रकृति में परिवर्तन आता है।

इसी भाँति परमानन्द कवि प्रणीत वैषार्य शतक और गोस्वामी जनादेश भूवाहरि तात्त्वक प्रणीत वैषार्य शतक में भी मिन:—मिना स्थलों पर विवेकशील प्रभावी पुरुष का मननपर मनुष्यों में मिन:—मिना प्रकृति, गणिका जन की प्रेम सहित कठोर प्रकृति आदि का विवेचन किया गया है। दूसरी ओर प्रभवध सुधाकर में का अपने बच्चों के प्रति सनेह तथा अन्य जनों के विषय में शंकालु प्रकृति आदि भी वर्णित हुआ है। कलिविरबन्ध में भी धूल सन्धारी की प्रकृति आदि का अच्छा चित्रण है।
प्राकृतिक उपादानों का अप्रस्तुत विधान इन सभी शतक काव्यों में न्यूनाधिक हुआ है इसके अन्तर्गत प्रचंड वायु, लता, बादल, नीलमैच, बिजली, पर्वत,, वृक्ष, कमल, समुद्र, महा सर्व, अभिनि, कूप आदि का अप्रस्तुत रूप में प्राप्त इन सभी शतक काव्यों में विधान हुआ है तथा इसके साथ ही चांदनी, मकर, भ्रमर, सरोवर, चन्द्रमा, चन्द्रप्रभा, हंस, दायापन धूम तहरी, पृथिवी अंधकार, जल, रात्रि, पुष्प, फल वृक्ष, गंगाजल, मेघ, वर्फ, प्रमाण अंधकार, सुधा और सूक्रराम, चकोर, विद्वान युक्त मेघ समूह, तमाल वृक्ष, अमृत, यमुना नदी, भ्रमर और पराग, द्राक्षा और अमृत, सुमेर पर्वत, धूम, वर्षा ऋतु, सूर्य, शिंह, खास, समुद्र, धड़ियाल, पक्षी, तमाल, नदी और तरंग, लता और पल्लव, हंस और बक, कोकिल और काक तथा स्वर्ण और हरिद्रा वृक्ष का अप्रस्तुत रूप में विधान अधिकांशत: काव्यों में किया गया है। इसके अतिरिक्त भूट्हरि कृत वैराग्य शतक में कमल पत्र स्थित जल बिन्दु वृक्षों का विध्वंस भंवर आदि शूगार वैराग्य तरंगिनियों में उदाहरण, सर्प श्रेणी, सर्प निर्माण, सर्प विल, हाथी, तृप्तार अंध, निम्ब वृक्ष, धूल, कीचड़ आदि अपवाद दीक्षित कृत वैराग्य शतक में धान मघ घठ में स्थित कुश वृक्ष, तृण, इशु दण्ड, खद्दोट आदि भामिनी विलास में लताओं से युक्त तमाल वृक्ष, वर्षा कालीन मेघ, ग्रीष्म कालीन प्रचंड सूर्य और असहानीय धूप प्रयङ्गुलता से युक्त मरस्थत, रात्रि, पशु, गघु, माथिक, पल्लव आदि तथा वैराग्य धनद शतक में वन खरेगों, महिष, नाग, तैल, पक्षी, ज्योति, नदी, मछली, जल प्रपात, वानर, आकाश आदि का अप्रस्तुत रूप में विधान हुआ है। परमानंद कवि प्रणीत वैराग्य शतक में भी पाद मूल गार्त, हलाहल विष कल्प वृक्ष वक, हरिद्रा वृक्ष आदि तथा गोस्वामी जनाधर भट्ट कृत वैराग्य शतक में नील मेघ आदि का अप्रस्तुत रूप में विधान हुआ है।

निषेधकार: हम कह सकते हैं कि वैराग्य परक शतक काव्यों में भी नीतिपरक काव्यों की भांति ही जहाँ अन्तः प्रकृति विचार और प्राकृतिक पदार्थों का अप्रस्तुत विधान सर्वनाश उपलब्ध होता है वहीं वाह्य प्रकृति विचार की उपलब्धि अत्यन्त अल्प मात्रा में दृष्टिगोचर होती है। सम्बन्धत: इन काव्यों में विद्वान प्रधान होने के कारण ही ऐसी स्थिति दृष्टिगोचर होती है। सामान्यतया प्रकृतिविचार की दृष्टि से यहाँ निर्दिष्ट शतककाव्यों में वैराग्य धनद शतक सवाधिक महत्वपूर्ण काव्य परिलक्षित होता है, श्रेष्ठ सभी काव्यों में प्रकृतिविचार का सामान्य विस्तार मिलता है। शूगारवैराग्यतरंगिणी का कलेवर लघु होते हुए भी प्रकृतिविचार की दृष्टि से वह भी समान महत्व रखती है।
संदर्भ ग्रंथ

1. वैशाख 15
2. वैशाख 22
3. वैशाख 41
4. वैशाख 40
5. वैशाख 43.
6. वैशाख 60
7. वैशाख 70
8. वैशाख 93
9. वैशाख —परिशीलन 2
10. वैशाख 69
11. वैशाख 94
12. वैशाख 100
13. वैशाख परिशीलन 4
14. वैशाख 49
15. वैशाख 57
16. वैशाख 60
17. वैशाख 79
18. वैशाख 85
19. वैशाख 99
20. वैशाख परिशीलन 1
21. वैशाख 4
22. वैशाख 5
23. वैशाख 7.
24. वैशाख 10
25. वैशाख 17.
26. वैशाख 33
27. वैशाख 39
57. शूष्कैैता 1
58. शूष्कैैता 2
59. शूष्कैैता 3, 4, 6 आदि।
60. शूष्कैैता 3
61. शूष्कैैता 13
62. शूष्कैैता 22
63. शूष्कैैता 5
64. शूष्कैैता 9
65. शूष्कैैता 20, 25, 38 आदि।
66. शूष्कैैता 9
67. शूष्कैैता 14
68. शूष्कैैता 15
69. शूष्कैैता 17, 19, 21 आदि।
70. शूष्कैैता 11
71. शूष्कैैता 2
72. शूष्कैैता 6
73. शूष्कैैता 7, 15, 16, 29, 36 आदि, यही 36
74. शूष्कैैता 42
75. शूष्कैैता 12
76. शूष्कैैता 17
77. शूष्कैैता 18,
78. शूष्कैैता 23, 25, 27 आदि।
79. शूष्कैैता 1
80. शूष्कैैता 33
81. शूष्कैैता 37
82. शूष्कैैता 23
83. शूष्कैैता 41
84. शूष्कैैता 36
85. शूष्कैैता 2

340


86 শৃণুয়ালা 28
87 শৃণুয়ালা 38
88 শৃণুয়ালা 5
89 শৃণুয়ালা 2
90 শৃণুয়ালা 28
91 শৃণুয়ালা 8
92 শৃণুয়ালা 19
93 শৃণুয়ালা 20, 27, 43 আদি
94 শৃণুয়ালা 38
95 শৃণুয়ালা 43
96 শৃণুয়ালা 27
97 শৃণুয়ালা 1
98 শৃণুয়ালা 8
99 শৃণুয়ালা 11
100 শৃণুয়ালা 41
101 শৃণুয়ালা 39, 45 আদি।
102 শৃণুয়ালা 12
103 শৃণুয়ালা 40
104 শৃণুয়ালা 131
105 শৃণুয়ালা 3
106 শৃণুয়ালা 17
107 শৃণুয়ালা 46
108 শৃণুয়ালা 17
109 শৃণুয়ালা 18
110 শৃণুয়ালা 39
111 শৃণুয়ালা 24
112 শৃণুয়ালা 25
113 শৃণুয়ালা 29
114 শৃণুয়ালা 37

341
<table>
<thead>
<tr>
<th>Page</th>
<th>Note</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>86</td>
<td>शूरौछेत्र 28</td>
</tr>
<tr>
<td>87</td>
<td>शूरौछेत्र 38</td>
</tr>
<tr>
<td>88</td>
<td>शूरौछेत्र 5</td>
</tr>
<tr>
<td>89</td>
<td>शूरौछेत्र 2</td>
</tr>
<tr>
<td>90</td>
<td>शूरौछेत्र 28</td>
</tr>
<tr>
<td>91</td>
<td>शूरौछेत्र 8</td>
</tr>
<tr>
<td>92</td>
<td>शूरौछेत्र 19</td>
</tr>
<tr>
<td>93</td>
<td>शूरौछेत्र 20, 27, 43 आदि</td>
</tr>
<tr>
<td>94</td>
<td>शूरौछेत्र 38</td>
</tr>
<tr>
<td>95</td>
<td>शूरौछेत्र 43</td>
</tr>
<tr>
<td>96</td>
<td>शूरौछेत्र 27</td>
</tr>
<tr>
<td>97</td>
<td>शूरौछेत्र 1</td>
</tr>
<tr>
<td>98</td>
<td>शूरौछेत्र 8</td>
</tr>
<tr>
<td>99</td>
<td>शूरौछेत्र 11</td>
</tr>
<tr>
<td>100</td>
<td>शूरौछेत्र 41</td>
</tr>
<tr>
<td>101</td>
<td>शूरौछेत्र 39, 45 आदि</td>
</tr>
<tr>
<td>102</td>
<td>शूरौछेत्र 12</td>
</tr>
<tr>
<td>103</td>
<td>शूरौछेत्र 40</td>
</tr>
<tr>
<td>104</td>
<td>शूरौछेत्र 131</td>
</tr>
<tr>
<td>105</td>
<td>शूरौछेत्र 3</td>
</tr>
<tr>
<td>106</td>
<td>शूरौछेत्र 17</td>
</tr>
<tr>
<td>107</td>
<td>शूरौछेत्र 46</td>
</tr>
<tr>
<td>108</td>
<td>शूरौछेत्र 17</td>
</tr>
<tr>
<td>109</td>
<td>शूरौछेत्र 18</td>
</tr>
<tr>
<td>110</td>
<td>शूरौछेत्र 39</td>
</tr>
<tr>
<td>111</td>
<td>शूरौछेत्र 24</td>
</tr>
<tr>
<td>112</td>
<td>शूरौछेत्र 25</td>
</tr>
<tr>
<td>113</td>
<td>शूरौछेत्र 29</td>
</tr>
<tr>
<td>114</td>
<td>शूरौछेत्र 37</td>
</tr>
</tbody>
</table>
170  भाविव 4/2,4,5 आदि
171  भाविव 3/24
172  भाविव 4/20
173  भाविव 4/1
174  भाविव 4/32
175  भाविव 4/10
176  भाविव 4/12
177  भाविव 4/40
178  भाविव 4/41
179  भाविव 4/27, 28
180  भाविव 4/38
181  भाविव 4/39
182  भाविव 4/41
183  दृष्टभाविव 4/42,43,44 आदि
184  भाविव 4/10
185  भाविव 4/1
186  भाविव 4/7
187  भाविव 4/1
188  भाविव 4/1
189  भाविव 4/2
190  भाविव 4/23
191  भाविव 4/33,40 आदि
192  भाविव 4/2
193  भाविव 4/15
194  भाविव 4/37 आदि।
195  भाविव 4/2
196  भाविव 4/3
197  भाविव 4/4
198  भाविव 4/5
<table>
<thead>
<tr>
<th>Number</th>
<th>Text</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>198B</td>
<td>4/13</td>
</tr>
<tr>
<td>198C</td>
<td>4/17</td>
</tr>
<tr>
<td>199</td>
<td>4/5</td>
</tr>
<tr>
<td>200</td>
<td>4/5</td>
</tr>
<tr>
<td>201</td>
<td>4/13</td>
</tr>
<tr>
<td>202</td>
<td>4/16, 18 आदि</td>
</tr>
<tr>
<td>203</td>
<td>4/6</td>
</tr>
<tr>
<td>204A</td>
<td>4/6</td>
</tr>
<tr>
<td>204B</td>
<td>4/21</td>
</tr>
<tr>
<td>205</td>
<td>4/7</td>
</tr>
<tr>
<td>206</td>
<td>4/34</td>
</tr>
<tr>
<td>207</td>
<td>4/8</td>
</tr>
<tr>
<td>208</td>
<td>4/12</td>
</tr>
<tr>
<td>209</td>
<td>4/15</td>
</tr>
<tr>
<td>210A</td>
<td>4/15</td>
</tr>
<tr>
<td>210B</td>
<td>4/15</td>
</tr>
<tr>
<td>211</td>
<td>4/17</td>
</tr>
<tr>
<td>212</td>
<td>4/38</td>
</tr>
<tr>
<td>213</td>
<td>4/43</td>
</tr>
<tr>
<td>214</td>
<td>4/21</td>
</tr>
<tr>
<td>215</td>
<td>4/22</td>
</tr>
<tr>
<td>216</td>
<td>4/30</td>
</tr>
<tr>
<td>217</td>
<td>4/41</td>
</tr>
<tr>
<td>218</td>
<td>4/34</td>
</tr>
<tr>
<td>219</td>
<td>4/35</td>
</tr>
<tr>
<td>220</td>
<td>4/35</td>
</tr>
<tr>
<td>221</td>
<td>4/36</td>
</tr>
<tr>
<td>222</td>
<td>4/39</td>
</tr>
<tr>
<td>223</td>
<td>4/40</td>
</tr>
</tbody>
</table>
२५३. वै० ध० श० ८९
२५४. वै० ध० श० ९३
२५५. वै० ध० श० ९४
२५६. वै० ध० श० १०१
२५७. वै० ध० श० १०१
२५८. वै० ध० श० १०६
२५९. वै० ध० श० १०७
२६०. वै० ध० श० १०८
२६१. वै० ध० श० ८२
२६२. वै० ध० श० ६९
२६३. वै० ध० श० ३७
२६४. वै० ध० श० ४२
२६५. वै० ध० श० ३४
२६६. वै० ध० श० ७
२६७. वै० ध० श० ५
२६८. वै० ध० श० ७
२६९. वै० ध० श० ६
२७०. वै० ध० श० ८
२७१. वै० ध० श० १०
२७२. वै० ध० श० १२
२७३. वै० ध० श० १७
२७४. वै० ध० श० २२
२७५. वै० ध० श० २६
२७६. वै० ध० श० ४०, ६८ आदि।
२७७. वै० ध० श० ३६
२७८. वै० ध० श० ५४
२७९. वै० ध० श० ५८
२८०. वै० ध० श० ७५
२८१. वै० ध० श० ८६
<table>
<thead>
<tr>
<th>No.</th>
<th>Author</th>
<th>Page</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>340</td>
<td>वैशाख (पद्मानन्द)</td>
<td>29</td>
</tr>
<tr>
<td>341</td>
<td>वैशाख (पद्मानन्द)</td>
<td>43</td>
</tr>
<tr>
<td>342</td>
<td>वैशाख (पद्मानन्द)</td>
<td>51</td>
</tr>
<tr>
<td>343</td>
<td>वैशाख (पद्मानन्द)</td>
<td>61</td>
</tr>
<tr>
<td>344</td>
<td>वैशाख (पद्मानन्द)</td>
<td>74</td>
</tr>
<tr>
<td>345</td>
<td>वैशाख (पद्मानन्द)</td>
<td>81</td>
</tr>
<tr>
<td>346</td>
<td>वैशाख (पद्मानन्द)</td>
<td>98</td>
</tr>
<tr>
<td>347</td>
<td>वैशाख (जनार्दन भट्ट)</td>
<td>1</td>
</tr>
<tr>
<td>348</td>
<td>वैशाख (जनार्दन भट्ट)</td>
<td>2</td>
</tr>
<tr>
<td>349</td>
<td>वैशाख (जनार्दन भट्ट)</td>
<td>11</td>
</tr>
<tr>
<td>350</td>
<td>वैशाख (जनार्दन भट्ट)</td>
<td>25</td>
</tr>
<tr>
<td>351</td>
<td>वैशाख (जनार्दन भट्ट)</td>
<td>26</td>
</tr>
<tr>
<td>352</td>
<td>वैशाख (जनार्दन भट्ट)</td>
<td>29</td>
</tr>
<tr>
<td>353</td>
<td>वैशाख (जनार्दन भट्ट)</td>
<td>54</td>
</tr>
<tr>
<td>354</td>
<td>वैशाख (जनार्दन भट्ट)</td>
<td>63</td>
</tr>
<tr>
<td>355</td>
<td>वैशाख (जनार्दन भट्ट)</td>
<td>66</td>
</tr>
<tr>
<td>356</td>
<td>वैशाख (जनार्दन भट्ट)</td>
<td>66</td>
</tr>
<tr>
<td>357</td>
<td>वैशाख (जनार्दन भट्ट)</td>
<td>73</td>
</tr>
<tr>
<td>358</td>
<td>वैशाख (जनार्दन भट्ट)</td>
<td>83</td>
</tr>
<tr>
<td>359</td>
<td>वैशाख (जनार्दन भट्ट)</td>
<td>94</td>
</tr>
<tr>
<td>360</td>
<td>मुग्धोपदेशा</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>361</td>
<td>प्रबोध सुधाकर</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>362</td>
<td>शान्ति शतक</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>363</td>
<td>कामियो 90</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>